126वाँ संस्करण

सितम्बर 2025

मन की बात

स्वदेशी संकल्प

आत्मनिर्भरता का उत्सव

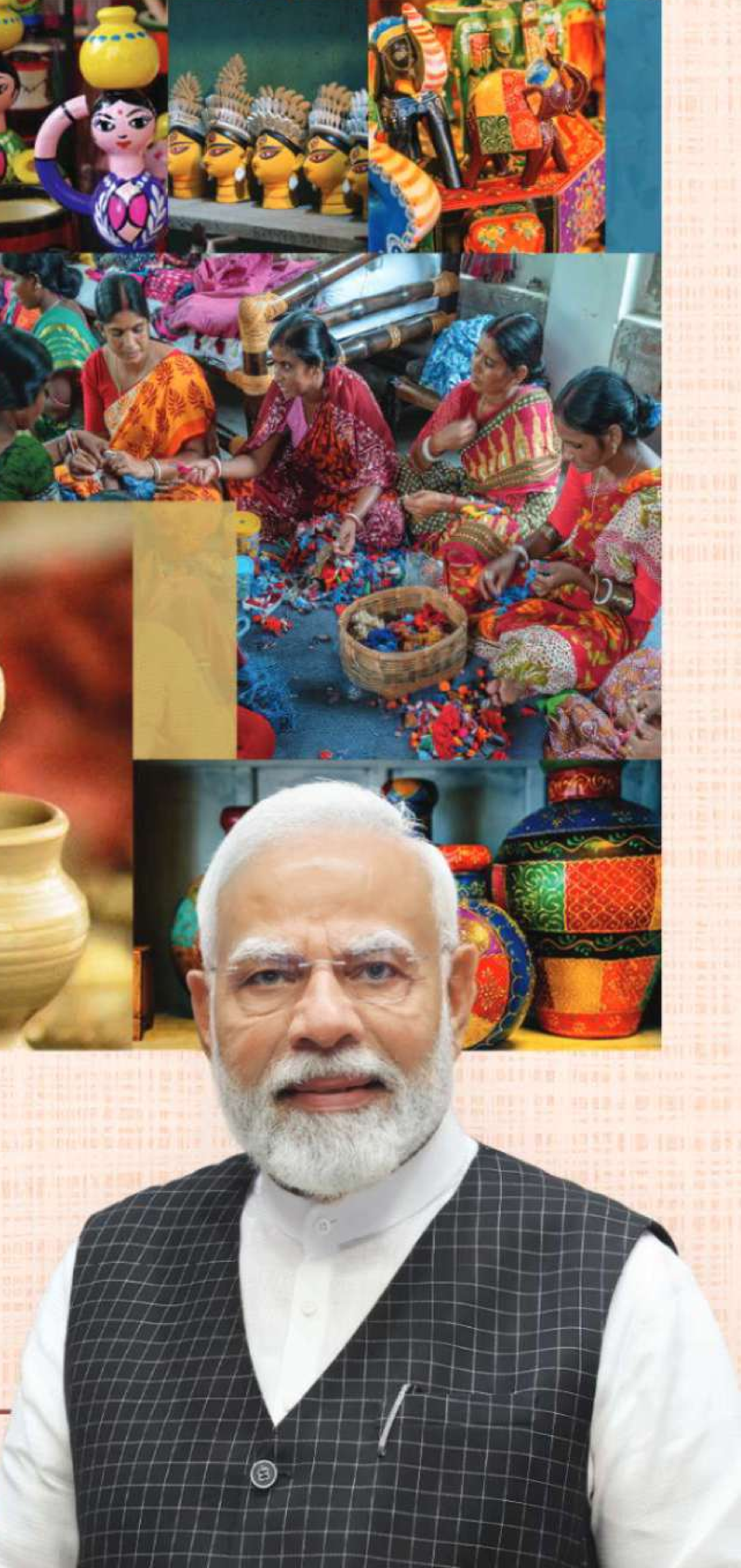

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

प्रधानमंत्री का सन्देश

सूची क्रम

मुख्य आलेख

22 **भगत सिंह** : शाश्वत युवा प्रतीक

30 **शक्ति के साथ सफर** : महासागरों को जीतने वाली बेटियाँ

34 **भारत की अमूर्त धरोहरें** : छठ पूजा को मिलेगी वैश्विक पहचान

38 **फर्श से अर्श तक** : हथकरघा और हस्तशिल्प की नई पहचान

64 **एस. एल. भैरप्पा** : जीवन और विरासत

संक्षेप में

28 **लता मंगेशकर** : सुर, संस्कृति और संवेदना का संगम

44 उत्सवों में स्थानीयता की छाप : स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा

46 दुर्गा पूजा 2025

50 महात्मा गाँधी : स्वदेशी के प्रतीक

52 राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष : सेवा और राष्ट्र निर्माण की एक सदी

लेख

54 अलविदा : असम की धड़कन जुबीन गर्ग – डॉ हिमंत बिस्वा सर्मा

56 सीमाओं से परे एक विरासत की परीकथा – इज़ाबेल ऐना

60 जीएसटी 2.0 : केवल मूल्य ही नहीं घटे, दक्षता लाभ के द्वार भी खुले – संजीव सान्याल

69 प्रतिक्रियाएँ

मेरे प्यारे देशवासियो

'मन की बात' में आप सभी से जुड़ना, आप सभी से सीखना, देश के लोगों की उपलब्धियों के बारे में जानना, वाकई मुझे बहुत सुखद अनुभव देता है। एक-दूसरे के साथ अपनी बातें साझा करते हुए, अपनी **'मन की बात'** करते हुए, हमें पता ही नहीं चला कि इस **कार्यक्रम ने 125 एपिसोड पूरे कर लिए। आज इस कार्यक्रम का 126वां एपिसोड है और आज के दिन के साथ कुछ विशेषताएँ भी जुड़ी हैं। आज भारत की दो महान विभूतियों की जयंती है। मैं बात कर रहा हूँ-** शहीद भगत सिंह और लता दीदी की।

साथियो, अमर शहीद भगत सिंह, हर भारतवासी, विशेषकर देश के युवाओं के लिए एक प्रेरणापुंज हैं। निर्भीकता उनके स्वभाव में कूट-कूट कर भरी थी। देश के लिए फाँसी के फंदे पर झूलने से पहले भगत सिंह जी ने अंग्रेजों को एक पत्र भी लिखा था। उन्होंने कहा था कि मैं चाहता हूँ कि आप मुझे और मेरे साथियों से युद्धबंदी जैसा व्यवहार करें। इसलिए हमारी जान फाँसी से नहीं, सीधा गोली मारकर ली जाए। यह उनके अदम्य साहस का प्रमाण है। **भगत सिंह जी लोगों की पीड़ा के प्रति भी बहुत संवेदनशील थे और उनकी मदद में हमेशा आगे रहते थे। मैं शहीद भगत सिंह जी को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।**

भगत सिंह
भारत के अमर शहीद

1. 28 सितम्बर, 1907 को लायलपुर जिले (अब पाकिस्तान में) के बंगा गाँव में जन्मे।
2. शहीदों में सबसे महान, शहीद-ए-आजम की प्यारी उपाधि से याद किए जाते हैं।
3. 23 मार्च, 1931 को जब उन्हें फाँसी दी गई, तब उनकी आयु 23 वर्ष थी।

साथियो, आज लता मंगेशकर की भी जयंती है। भारतीय संस्कृति और संगीत में रुचि रखने वाला कोई भी उनके गीतों को सुनकर अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता। उनके गीतों में वो सब कुछ है जो मानवीय संवेदनाओं को झकझोरता है। उन्होंने देशभक्ति के जो गीत गाए, उन गीतों ने लोगों को बहुत प्रेरित किया। भारत की संस्कृति से भी उनका गहरा जुड़ाव था। मैं लता दीदी के लिए हृदय से अपनी श्रद्धांजलि प्रकट करता हूँ। साथियो, लता दीदी जिन महान विभूतियों से प्रेरित थीं उनमें वीर सावरकर भी एक हैं, जिन्हें वो 'तात्या' कहती थीं। उन्होंने वीर सावरकर जी के कई गीतों को भी अपने सुरों में पिरोया।

लता दीदी से मेरा स्नेह का जो बंधन था, वो हमेशा कायम रहा। वो मुझे बिना भूले हर साल राखी भेजा करती थीं। मुझे याद है मराठी सुगम संगीत की महान हस्ती सुधीर फड़के जी ने सबसे पहले लता दीदी से मेरा परिचय कराया था और मैंने लता दीदी को कहा कि मुझे आपके द्वारा गाया और सुधीर जी द्वारा संगीतबद्ध गीत 'ज्योति कलश छलके' बहुत पसंद है।

साथियो, आप भी मेरे साथ इसका आनंद लीजिए।

मेरे प्यारे देशवासियो, नवरात्रि के इस समय में हम शक्ति की उपासना करते हैं। हम नारीशक्ति का उत्सव मनाते हैं। Business से लेकर sports तक और education से लेकर science तक आप किसी भी क्षेत्र को लीजिए – देश की बेटियाँ हर जगह अपना परचम लहरा रही हैं। आज वे ऐसी चुनौतियों को भी पार कर रही हैं, जिनकी कल्पना तक मुश्किल है। अगर मैं आपसे ये सवाल करूँ, क्या आप समंदर में लगातार 8 महीने रह सकते हैं! क्या आप समंदर में पतवार वाली नाव यानी हवा के वेग

से आगे बढ़ने वाली नाव से 50 हजार किलोमीटर की यात्रा कर सकते हैं, और वो भी तब, जब, समंदर में मौसम कभी भी बिगड़ जाता है! ऐसा करने से पहले आप हज़ार बार सोचेंगे, लेकिन **भारतीय नौसेना की दो बहादुर officers ने नाविका सागर परिक्रमा के दौरान ऐसा कर दिखाया है। उन्होंने दिखाया है कि साहस और दृढ़ संकल्प होता क्या है।** आज मैं 'मन की बात' के श्रोताओं को इन दो जांबाज officers से मिलवाना चाहता हूँ। **एक हैं Lieutenant commander दिलना और दूसरी हैं Lieutenant commander रूपा।** ये दोनों officers हमारे साथ phone line पर जुड़ी हुई हैं।

प्रधानमंत्री : हैलो।

Lieutenant commander दिलना : हैलो Sir।

प्रधानमंत्री : नमस्कार जी।

Lieutenant commander दिलना : नमस्कार Sir

प्रधानमंत्री : तो मेरे साथ Lieutenant Commander दिलना और

Lieutenant Commander रूपा : दोनों हैं आप साथ में?

Lieutenant commander दिलना और रूपा : जी Sir दोनों हैं ।

प्रधानमंत्री : चलिए आप दोनों को नमस्कारम और वणक्कम।

Lieutenant commander दिलना : वणक्कम Sir,

मानवीय संवेदनाओं की प्रतिध्वनि
लता मंगेशकर

- मेलोडी क्वीन के नाम से मशहूर
- 28 सितम्बर, 1929 को जन्म
- 13 साल की उम्र में मराठी फिल्म 'किती हसाल' के लिए अपना पहला पार्श्व गीत रिकॉर्ड किया
- मूल नाम हेमा था और वह पाँच भाई-बहनों में सबसे बड़ी थीं।

Lieutenant commander रूपा : नमस्कारम Sir।

प्रधानमंत्री : अच्छा सबसे पहले तो देशवासी सुनना चाहते हैं आप दोनों के बारे में, आप जरा बताइए।

Lieutenant commander दिलना : Sir मैं Lieutenant Commander दिलना हूँ। और मैं Indian Navy में logistics cadre से हूँ Sir मैं Navy में 2014 में commissioned हुई थी Sir और मैं केरल में Kozhikode से हूँ, Sir मेरा father Army में थे और मेरा Mother House wife है। मेरा husband भी Indian Navy में Officer है Sir, और मेरा sister NCC में नौकरी करती है।

Lieutenant commander रूपा : जय हिन्द Sir, मैं Lieutenant Commander रूपा हूँ और मैं Navy 2017 Naval Armament Inspection cadre में join किया है और मेरे father तमिलनाडु से हैं और मेरे mother Pondicherry से हैं। मेरे father Air Force में थे Sir, actually Defence join करने के लिए मुझे उनसे ही प्रेरणा मिली और मेरी mother home maker थी।

प्रधानमंत्री : अच्छा दिलना और रूपा आप से मैं जानना चाहूँगा कि आपकी जो सागर परिक्रमा में आपका experience देश सुनना चाहता है और मैं पक्का मानता हूँ ये कोई सरल काम नहीं है कई कठिनाइयाँ आई होंगी, बहुत मुश्किलें आपको पार करनी पड़ी होंगी।

Lieutenant commander दिलना : जी Sir. मैं आपको ये बोलना चाहती हूँ कि life में Sir एक बार हमें ऐसा मौका मिलता है जो हमारी जिंदगी बदल देती है Sir और **ये circumnavigation वो हमारे लिए ऐसी एक opportunity थी जो Indian Navy और Indian Government ने हमें दिया है और इस expedition में हम लगभग 47500 (forty seven thousand five hundred) kilometre sail किया Sir। हमने 2nd October 2024 को निकला गोवा से और 29th May 2025 को वापस आया और इस Expedition हमें complete करने के लिए 238 (Two hundred Thirty eight) days लगे Sir और 238 (Two hundred Thirty eight) days हम सिर्फ दोनों थे सर इस boat पर।**

प्रधानमंत्री : हम्म हम्म

Lieutenant Commander दिलना : और Sir expedition के लिए हमने तीन साल की तैयारी की Navigation से लेकर communication, emergency devices को कैसे operate करना, diving कैसे करते हैं और Boat में कुछ भी तरह की emergency हो, जैसे medical emergency से हो, कैसे manage करना, ये सब के बारे में हमें Indian Navy ने training दिया Sir और इस यात्रा में सबसे memorable moment मैं बोलना चाहती हूँ sir, कि हमने भारत की झंडा Point Nemo पर लहराया sir। Sir Point Nemo दुनिया की सबसे remotest location पे है sir, वहाँ से सबसे पास कोई इंसान है तो वो International Space Station में है और वहाँ पर एक sail boat में पहुँचने वाला पहला भारतीय और पहला Asian और दुनिया के पहला इंसान, हम बने sir और ये हमारे लिए गर्व की बात है sir

प्रधानमंत्री : वाह बहुत-बहुत बधाई आपको।

Lieutenant commander दिलना : Thank you sir

प्रधानमंत्री : आपके साथी भी कुछ कहना चाहते हो।

Lt. Commander Rupa : सर, मैं ये कहना चाहती हूँ कि ये Sail Boat से ये दुनिया का circumnavigation जो किया है उनका number Mt. Everest पहुँचने वाले के number से बहुत कम है। और actually, जो Sail Boat से अकेले जो circumnavigation करते हैं, उनके number जो space में गए हैं उनके number से भी बहुत कम है।

प्रधानमंत्री : अच्छा, इतनी complex journey के लिए बहुत team work की जरूरत होती है और वहाँ तो team में आप दो ही officers थीं। आप लोगों ने कैसे manage किया इसको?

Lt. Commander Rupa : जी सर, ऐसी यात्रा के लिए हम दोनों को एक साथ मेहनत करना पड़ता था और जैसे Lt. Commander Dilna ने बोला, ये achieve करने के लिए, **सिर्फ दोनों था**

boat पर और हम boat repairer थीं, engine mechanic थीं। Sail-maker, medical assistant, cook, cleaner, diver, navigator, और सब कुछ एक साथ बनना पड़ता था। और ये हमको achieve करने के लिए Indian Navy का बड़ा contribution था। और हमको हर तरह की training दिया है। Actually sir, हम चार साल से साथ sail कर रहे हैं, तो एक दूसरे की strength और weakness हम अच्छी तरह से जानते हैं। इसलिए हम सबको कहते हैं कि हमारे boat पर एक equipment थी जो कभी fail नहीं हुआ, वो हम दोनों का team work था।

प्रधानमंत्री : अच्छा, जब मौसम खराब होता था, क्योंकि ये समुद्री दुनिया तो ऐसी है, जहाँ मौसम का कोई ठिकाना नहीं। तो आप उस situation को कैसे handle करते थे!

Lt. Commander Rupa : सर, हमारी यात्रा में बहुत सारा adverse challenges सब थे सर। हमें इस expedition में कई challenges face करना पड़ा। Especially sir, Southern Ocean में हमेशा मौसम बुरा होता है। हमें तीन तूफ़ानों को भी face करना पड़ा और सर, हमारा boat सिर्फ 17 मीटर का है और length में उसका width है सिर्फ 5 मीटर। तो कभी-कभी कुछ लहरें आती थीं जो तीन storey building से भी बड़ी थी सर, और हमने बहुत ज्यादा गर्मी और बहुत ज्यादा सर्दी, दोनों face किया है हमारा journey में। Antarctica में सर जब हम sail कर रहे थे, हमारा temperature 1 degree Celsius और 90km/hr. का हवा, दोनों एक साथ हमको सामना करना पड़ा था। और हमने ठंड से बचने के लिए 6 to 7 layer कपड़े एक साथ पहनते थे और पूरा Southern Ocean हमने ऐसी 7 layer of clothing से किया सर। And कभी-कभी हम gas stove ले के हमारा हाथ को गरम करते थे सर, और

कभी ऐसे situations भी होते जब हवा बिल्कुल नहीं होता है और हम sail पूरा नीचे करके हम drift होता रहता है। और ऐसे वाली situation में actually sir हमारा patience test होता है।

प्रधानमंत्री : लोगों को सुनकर के भी बहुत हैरानी होगी कि हमारे देश की बेटियाँ ऐसा कष्ट उठा रही है। **अच्छा इस परिक्रमा के दौरान, आप अलग-अलग देशों में रुकती भी रहीं, वहाँ क्या experience होता था, जब भारत की 2 बेटियों को लोग देखते होंगे तो उनके मन में बहुत सारी बातें रहती होंगी।**

Lt. Commander Dilna : **जी sir, हमको बहुत अच्छा experience मिला sir, हमने 8 महीनों में 4 जगह पर रुकी थी sir, Australia, New Zealand, Port Stanley और South Africa, Sir.**

प्रधानमंत्री : हर जगह पर average कितना समय रुकना होता था?

Lt. Commander Dilna : **Sir, हमने 14 days stay किया sir, 1 जगह पर।**

प्रधानमंत्री : 1 जगह पर 14 days?

Lt. Commander Dilna : correct sir. और sir, हमने दुनिया के हर कोने में भारतीय को देखे sir, वो भी बहुत active और बहुत confidence के साथ, भारत का नाम रोशन कर रहे हैं। और हमको ऐसा लगा कि हमारा जो success है sir, वो अपना भी success समझते थे and हर जगह पर हमें अलग-अलग experience मिला जैसे Australia में, Western Australian Parliament के speaker ने, हमें बुलाया, वो हमें बहुत motivate किया sir, और हमेशा ये ऐसे सब चीज होता है sir, हमें बहुत गर्व होता था। और जब New Zealand में गए, तब माउरी लोगों ने हमें स्वागत किया और हमारा भारतीय culture के लिए बहुत respect दिखाया **sir, and एक important चीज है sir, Port Stanley एक remote island है sir वो South America के पास है, वहाँ पर total population सिर्फ three thousand five hundred है sir लेकिन वहाँ हमने एक Mini India देखा and वहाँ पर 45 Indians थे, उन्होंने हमें अपना समझा और हमें घर जैसा महसूस कराया sir.**

प्रधानमंत्री : अच्छा देश की उन बेटियों के लिए आप दोनों क्या Message देना चाहेंगी जो आपकी तरह ही कुछ अलग करना चाहती हैं।

Lieutenant commander रूपा : सर, मैं Lieutenant commander रूपा बोल रही हूँ अभी। मैं आपके माध्यम से मैं सबको ये कहना चाहती हूँ कि अगर कोई भी अपने दिल लगा के मेहनत किया तो इस दुनिया में कुछ भी impossible नहीं है। आप कहाँ से हो, कहाँ पैदा हुआ, वो कुछ matter नहीं करता। सर ये हम दोनों का इच्छा है कि भारत के युवा और महिलाएँ बड़े-बड़े सपना देखें और future

में all girls और women defence में, sports में, adventure में शामिल होके देश का नाम रोशन करें।

प्रधानमंत्री : दिलना और रूपा आपकी बातें सुनकर मुझे भी बहुत रोमांच अनुभव हो रहा है कि कितना बड़ा साहस आपने किया है। आप दोनों को मेरी तरफ से बहुत-बहुत धन्यवाद। निश्चित तौर पर आपकी मेहनत, आपकी सफलता, आपकी achievement देश के युवकों को, देश की युवतियों को बहुत प्रेरित करेगी। ऐसे ही तिरंगा लहराते रहिए भविष्य के प्रयासों के लिए, आपको मेरी ढेरों शुभकामनाएँ।

Lieutenant commander दिलना : Thank You Sir.

प्रधानमंत्री : बहुत-बहुत धन्यवाद। वणक्कम। नमस्कारम।

Lieutenant commander रूपा: नमस्कार।

साथियो, हमारे पर्व, त्योहार भारत की संस्कृति को जीवंत बनाए रखते हैं। छठ पूजा ऐसा एक पावन पर्व है जो दीवाली के बाद आता है। सूर्य देव को समर्पित यह महापर्व बहुत ही विशेष है। इसमें हम डूबते सूर्य को भी अर्ध्य देते हैं, उनकी आराधना करते हैं। छठ न सिर्फ देश के अलग-अलग हिस्सों में मनाई जाती है, बल्कि दुनिया भर में इसकी छटा देखने को मिलती है। आज ये एक global festival बन रहा है।

साथियो, मुझे आपको ये बताते हुए बहुत खुशी है कि भारत सरकार भी छठ पूजा को लेकर एक बड़े प्रयास में जुटी है। **भारत सरकार छठ महापर्व को UNESCO की Intangible Cultural Heritage List यानी UNESCO की सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल कराने का प्रयास कर रही है। छठ पूजा जब UNESCO की सूची में शामिल होगी तो दुनिया के कोने-कोने में लोग इसकी भव्यता और दिव्यता का अनुभव कर पाएँगे।**

साथियो, कुछ समय पहले भारत सरकार के ऐसे ही प्रयासों से कोलकाता की दुर्गा पूजा भी UNESCO की इस list का हिस्सा बनी है। हम अपने सांस्कृतिक आयोजनों को ऐसे ही वैश्विक पहचान दिलाएँगे तो दुनिया भी उनके बारे में जानेगी, समझेगी, उनमें शामिल होने के लिए आगे आएगी।

साथियो, 2 अक्तूबर को गाँधी जयंती है। गाँधी जी ने हमेशा स्वदेशी को अपनाने पर बल दिया और इनमें खादी सबसे प्रमुख थी। दुर्भाग्य से आज़ादी के बाद, खादी की रौनक कुछ फीकी पड़ती जा रही थी, लेकिन बीते 11 साल में खादी के प्रति देश के लोगों का आकर्षण बहुत बढ़ गया है। पिछले कुछ वर्षों में खादी की बिक्री में बहुत तेजी देखी गई है। **मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि 2 अक्तूबर को कोई-न-कोई खादी product जरूर खरीदें। गर्व से कहें - ये स्वदेशी हैं। इसे Social Media पर #VocalforLocal के साथ share भी करें।**

साथियो, खादी की तरह ही हमारे **handloom और handicraft sector में भी काफी बदलाव देखने को**

मिल रहा है। आज हमारे देश में ऐसे कई उदाहरण सामने आ रहे हैं, जो बताते हैं कि अगर परम्परा और innovation को एक साथ जोड़ दिया जाए, तो अद्भुत परिणाम मिल सकते हैं। जैसे, एक उदाहरण तमिलनाडु के Yaazh Naturals का है। यहाँ अशोक जगदीशन जी और प्रेम सेल्वाराज जी ने corporate नौकरी छोड़ एक नई पहल की। उन्होंने घास और केला fiber से Yoga Mat बनाए, herbal रंगों से कपड़े रंगे, और 200 परिवारों को training देकर उन्हें रोजगार दिया।

झारखंड के आशीष सत्यव्रत साहू जी ने Johargram Brand के जरिए आदिवासी बुनाई और परिधानों को Global Ramp तक पहुँचाया है। उनके प्रयासों से आज झारखंड की सांस्कृतिक धरोहर को दूसरे देशों के लोग भी जानने लगे हैं।

बिहार के मधुबनी जिले की स्वीटी कुमारी जी ने, उन्होंने भी संकल्प creation शुरू किया है। मिथिला painting को उन्होंने महिलाओं की आजीविका का साधन बना दिया है। आज 500 से ज्यादा ग्रामीण महिलाएँ उनके साथ जुड़ी हैं और आत्मनिर्भरता की राह पर हैं। सफलता की ये सभी गाथाएँ हमें सिखाती हैं कि हमारी परम्पराओं में आय के कितने ही साधन छिपे हुए हैं। अगर इरादा पक्का हो, तो सफलता हमसे दूर नहीं जा सकती।

मेरे प्यारे देशवासियो, अगले कुछ ही दिनों में हम विजयादशमी मनाने वाले हैं। इस बार विजयादशमी एक और वजह से बहुत विशेष है। इसी दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष हो रहे हैं। एक शताब्दी की

ये यात्रा जितनी अद्भुत है, अभूतपूर्व है, उतनी ही प्रेरक है। आज से 100 साल पहले जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई थी, तब देश सदियों से गुलामी की जंजीरों में बंधा था। सदियों की इस गुलामी ने हमारे स्वाभिमान और आत्मविश्वास को गहरी चोट पहुँचाई थी। विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता के सामने पहचान का संकट खड़ा किया जा रहा था। देशवासी हीन-भावना का शिकार होने लगे थे। इसलिए देश की आज़ादी के साथ-साथ ये भी महत्त्वपूर्ण था कि देश वैचारिक गुलामी से भी आज़ाद हो। ऐसे में, परम पूज्य **डॉ० हेडगेवार जी ने** इस विषय में मंथन करना शुरू किया और फिर इसी भगीरथ कार्य के लिए उन्होंने **1925 में विजयादशमी के पावन अवसर पर 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की स्थापना की।** डॉक्टर साहब के जाने के बाद परम पूज्य गुरु जी ने राष्ट्र सेवा के इस महायज्ञ को आगे बढ़ाया। परम पूज्य गुरुजी कहा करते थे – "राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय इदं न मम" यानी, ये मेरा नहीं है, ये राष्ट्र का है। इसमें स्वार्थ से ऊपर उठकर

सेवा की भावना प्रज्वलित करते
डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार

- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक, जिसे आरएसएस के नाम से जाना जाता है
- वर्ष प्रतिपदा यानी भारतीय नववर्ष के दिन 1 अप्रैल, 1889 को जन्म
- 'त्याग' हेडगेवार के दर्शन का मूल था
- उन्होंने पंद्रह वर्षों तक (सितम्बर 1925 में आरएसएस की स्थापना से 1940 में अपने निधन तक) संगठन के पहले सरसंघचालक (प्रमुख) के रूप में नेतृत्व किया।

राष्ट्र के लिए समर्पण का भाव रखने की प्रेरणा है। गुरुजी गोलवलकर जी के इस वाक्य ने लाखों स्वयंसेवकों को त्याग और सेवा की राह दिखाई है। त्याग और सेवा की भावना और अनुशासन की सीख यही संघ की सच्ची ताकत है। **आज RSS सौ वर्ष से बिना थके, बिना रुके, राष्ट्र सेवा के कार्य में लगा हुआ है। इसीलिए हम देखते हैं, देश में कहीं भी प्राकृतिक आपदा आए, RSS के स्वयंसेवक सबसे पहले वहाँ पहुँच जाते हैं। लाखों लाख स्वयंसेवकों के जीवन के हर कर्म, हर प्रयास में राष्ट्र प्रथम nation first की यह भावना हमेशा सर्वोपरि रहती है। मैं राष्ट्रसेवा के महायज्ञ में स्वयं को समर्पित कर रहे प्रत्येक स्वयंसेवक को अपनी शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ।**

मेरे प्यारे देशवासियो, अगले महीने 7 अक्तूबर को महर्षि वाल्मीकि जयंती है। हम सब जानते हैं, महर्षि वाल्मीकि भारतीय संस्कृति के कितने बड़े आधार हैं। ये महर्षि वाल्मीकि ही थे, जिन्होंने हमें भगवान राम की अवतार कथाओं से इतने विस्तार से परिचित करवाया था। **उन्होंने मानवता को रामायण जैसा अद्भुत ग्रंथ दिया।**

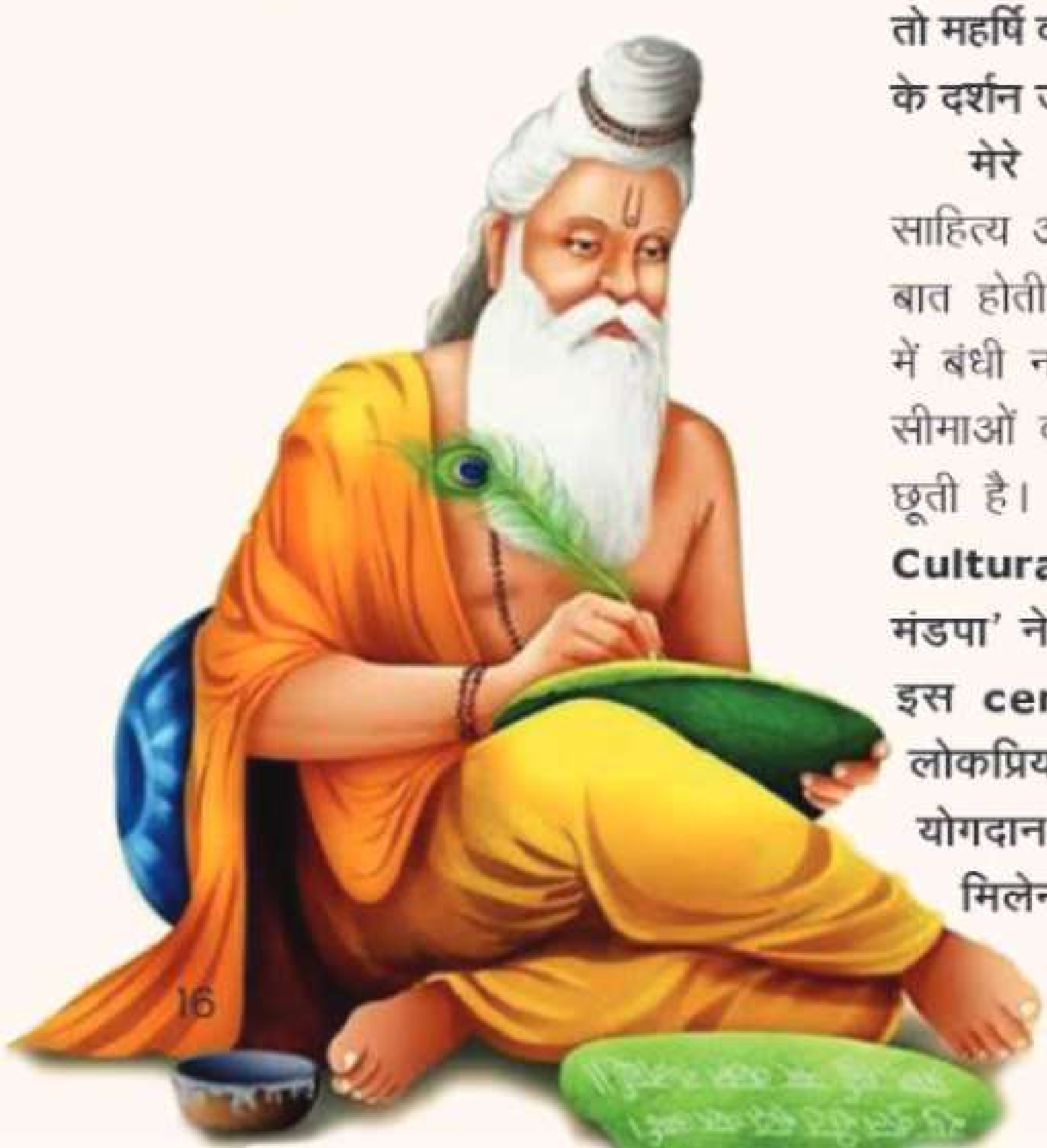

साथियो, रामायण का ये प्रभाव उसमें समाहित भगवान राम के आदर्शों और मूल्यों के कारण है। भगवान राम ने सेवा, समरसता और करुणा से सबको गले लगाया था। इसीलिए हम देखते हैं, महर्षि वाल्मीकि की रामायण के राम, माता शबरी और निषादराज के साथ ही पूर्ण होते हैं। इसीलिए साथियो, अयोध्या में जब राम मंदिर का निर्माण हुआ, तो साथ में निषादराज और महर्षि वाल्मीकि का भी मंदिर बनाया गया है। **मेरा आपसे आग्रह है, आप भी जब अयोध्या में रामलला के दर्शन करने जाएँ, तो महर्षि वाल्मीकि और निषादराज मंदिर के दर्शन जरूर करें।**

मेरे प्यारे देशवासियो, कला, साहित्य और संस्कृति की सबसे खास बात होती है कि ये किसी एक दायरे में बंधी नहीं होती। इनकी सुगंध सभी सीमाओं को पारकर लोगों के मन को छूती है। **हाल ही में Paris के एक Cultural Institute 'सौन्त्ख मंडपा' ने अपने 50 वर्ष पूरे किए हैं। इस centre ने भारतीय नृत्य को लोकप्रिय बनाने में अपना व्यापक योगदान दिया है। इसकी स्थापना मिलेना सालविनी ने की थी। उन्हें**

सीमाओं के पार दिलों को एकजुट करने वाली आवाज़

भूपेन हज़ारिका

- 'ब्रह्मपुत्र के कवि' और 'सुदकंठ' के नाम से प्रसिद्ध
- उनके प्रसिद्ध गीत 'बिस्तॉर्नें पारेरे' की धुन और चित्रांकन रॉबसन के 'ओल मैन रिवर' पर आधारित्त है।
- ढोला-सादिया पुल (असम) को उनके सम्मान में आधिकारिक तौर पर डॉ. भूपेन हजारिका सेतु कहा जाता है।

कुछ वर्ष पहले पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। मैं 'सौन्त्ख मंडपा' से जुड़े सभी लोगों को बहुत बधाई देता हूँ और भविष्य के प्रयासों के लिए उन्हें शुभकामनाएँ देता हूँ।

साथियो, अब मैं आपको दो छोटी audio clip सुना रहा हूँ, इन पर ध्यान दीजिएगा –

अब दूसरी clip भी सुनिए –

साथियो, ये आवाज इस बात की साक्षी है कि कैसे भूपेन हजारिका जी के गीतों से दुनियाभर के अलग-अलग देश आपस में जुड़ते हैं। दरअसल श्रीलंका में एक बेहद ही सराहनीय प्रयास हुआ है। इसमें भूपेन दा जी के प्रतिष्ठित गीत 'मनुहे-मनुहार बाबे' इसका श्रीलंकाई कलाकारों ने सिंहली और तमिल में अनुवाद किया है। मैंने आपको इन्हीं का audio सुनाया है। कुछ दिनों पहले मुझे असम में उनके जन्म-शताब्दी समारोह में शामिल होने का सौभाग्य मिला था। यह वास्तव में एक बहुत ही यादगार कार्यक्रम रहा।

साथियो, असम आज जहाँ भूपेन हज़ारिका जी की जन्मशताब्दी मना रहा है, वहीं कुछ दिनों पहले एक दुखद समय भी आया है। जुबीन गर्ग जी के असामयिक निधन से लोग शोक में हैं।

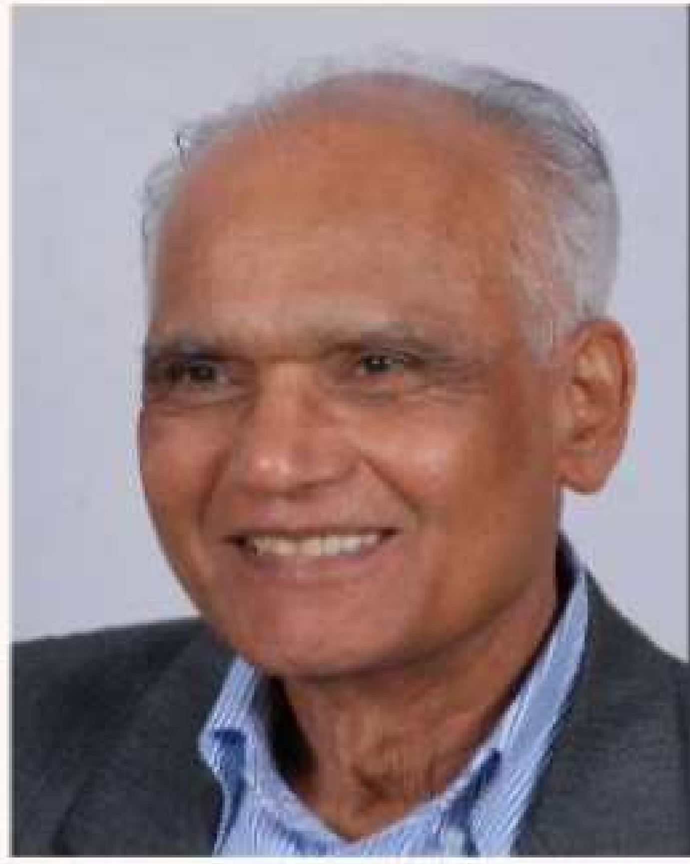

भारत की भावना में निहित एक विचारक
डॉ. एस. एल. भैरप्पा

- 25 से ज्यादा उपन्यास लिखे, जिनमें कुछ नाम हैं -*वंशवृक्ष, दातु, पर्व*
- उनके उपन्यासों का कई भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है।
- उन्हें 2023 में तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'पद्मभूषण', प्रदान किया गया।

जुबीन गर्ग एक मशहूर गायक थे, जिन्होंने देशभर में अपनी पहचान बनाई। असम की संस्कृति से उनका बहुत गहरा लगाव था। **जुबीन गर्ग हमारी यादों में हमेशा बने रहेंगे और उनका संगीत आने वाली पीढ़ियों को मंत्रमुग्ध करता रहेगा।**

जुबीन गर्ग, आसिल अहोमॉर हमोसकृतिर, उज्जॉल रत्नो ..

जनोतार हृदयॉत, तेयो हदाय जियाय, थाकीबो।

[Translation:

Zubeen was the Kohinoor (the brightest gem) of Assamese Culture. Though he is physically gone from our midst, he will remain forever in our hearts.]

साथियो, कुछ दिन पहले हमारे देश ने एक महान विचारक और चिंतक एस. एल. भैरप्पा जी को भी खो दिया है। मेरा भैरप्पा जी से व्यक्तिगत संपर्क भी रहा और हमारे बीच कई मौकों पर अलग-अलग विषयों पर गहन बातचीत भी हुई। उनकी रचनाएँ युवा पीढ़ी के विचारों को दिशा देती रहेंगी। कन्नड़ की उनकी बहुत सारी रचनाओं का अनुवाद भी उपलब्ध है। **उन्होंने हमें बताया कि अपनी जड़ों और संस्कृति पर गर्व करना कितना मायने रखता है। मैं एस. एल. भैरप्पा जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और युवाओं से उनकी रचनाएँ पढ़ने का आग्रह करता हूँ।**

मेरे प्यारे देशवासियो, आने वाले दिनों में एक के बाद एक त्योहार और खुशियाँ आने वाली हैं। हर पर्व पर हम खरीदारी भी खूब करते हैं। और इस बार तो 'GST बचत उत्सव' भी चल रहा है।

साथियो, एक संकल्प लेकर आप अपने त्योहारों को और खास बना सकते हैं। अगर हम ठान लें कि इस बार त्योहार सिर्फ स्वदेशी चीजों से ही मनाएँगे, तो देखिएगा, हमारे उत्सव की रौनक कई गुना बढ़ जाएगी। 'Vocal for Local' को खरीदारी का मंत्र बना दीजिए। ठान लीजिए, हमेशा के लिए, जो देश में तैयार हुआ है, वही खरीदेंगे। जिसे देश के लोगों ने बनाया है, वही घर ले जाएँगे। जिसमें देश के किसी नागरिक की मेहनत है, उसी सामान का उपयोग करेंगे। **जब हम ऐसा करते हैं, तो हम सिर्फ कोई सामान नहीं खरीदते, हम किसी परिवार की उम्मीद घर लाते हैं, किसी कारीगर की मेहनत को सम्मान देते हैं, किसी युवा उद्यमी के सपनों को पंख देते हैं।**

साथियो, त्योहारों पर हम सब अपने घर की सफाई में जुट जाते हैं। लेकिन स्वच्छता सिर्फ घर की चारदीवारी तक सीमित न रहे। गली, मोहल्ला, बाज़ार, गाँव हर जगह पर सफाई हमारी ज़िम्मेदारी बने।

साथियो, हमारे यहाँ ये पूरा समय उत्सवों का समय रहता है और दीवाली एक प्रकार से महा-उत्सव बन जाता है। **मैं आप सबको आने वाली दीपावली की भी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ लेकिन साथ-साथ फिर से दोहराऊँगा हमें आत्मनिर्भर बनना है, देश को आत्मनिर्भर बना कर के ही रहना है और उसका रास्ता स्वदेशी से ही आगे बढ़ता है।**

साथियो, 'मन की बात' में इस बार इतना ही। अगले महीने फिर नई गाथाओं और प्रेरणाओं के साथ मुलाकात करूँगा। तब तक, आप सबको शुभकामनाएँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

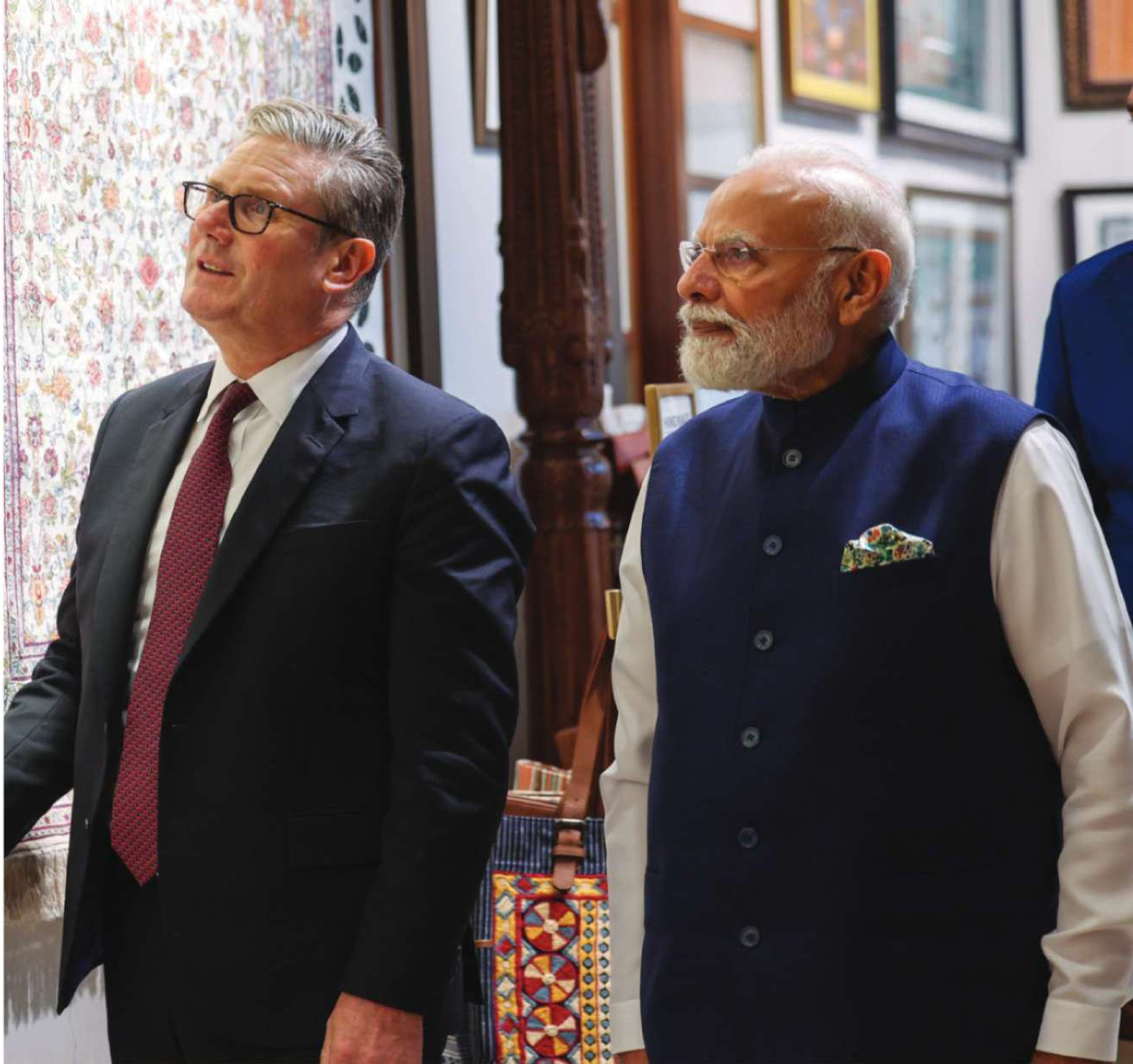

भगत सिंह

शाश्वत युवा प्रतीक

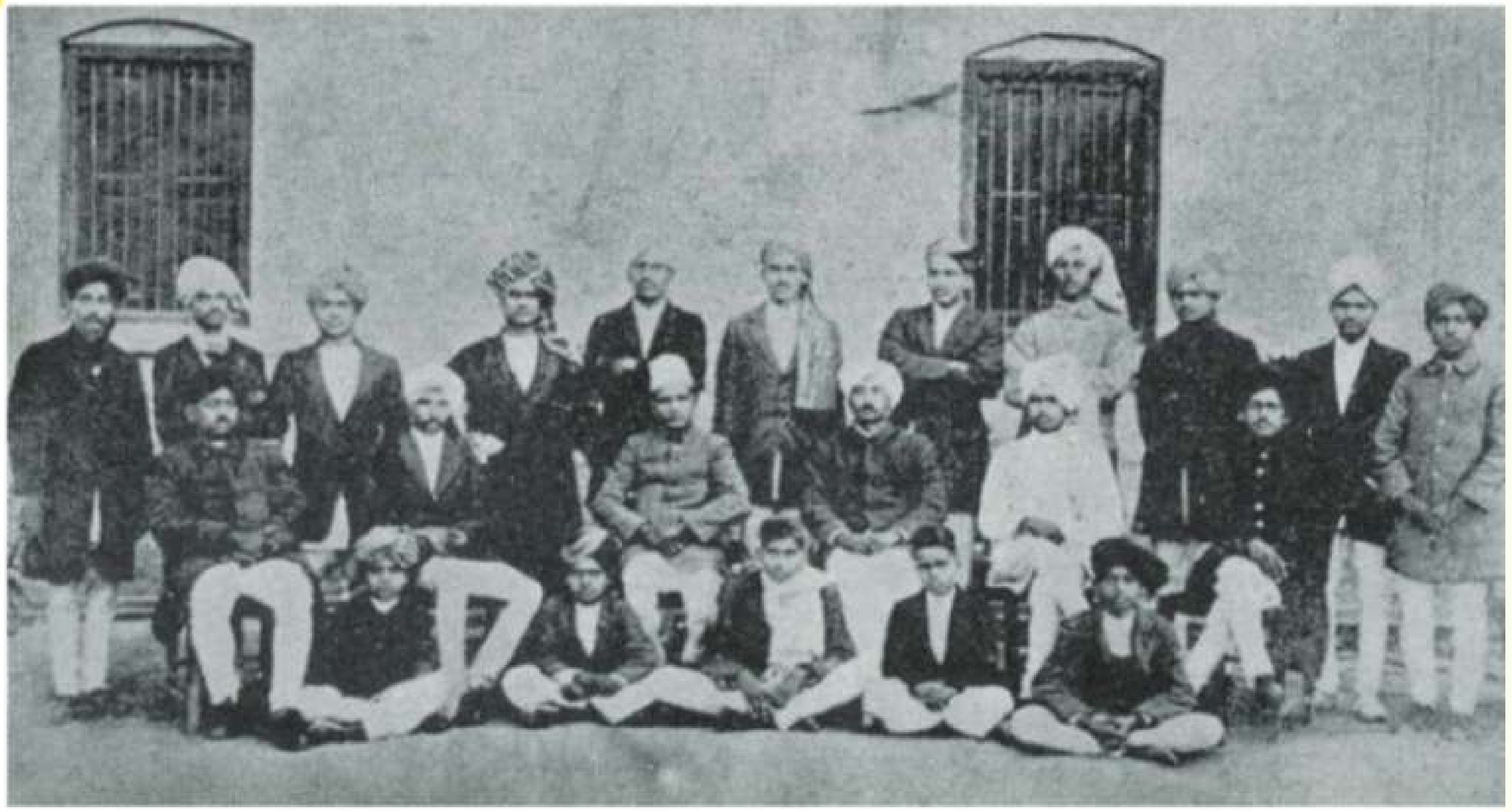

लाहौर कॉलेज ड्रामा क्लब में भगत सिंह की तस्वीर (पिछली पंक्ति, दाएं से चौथे) (1924)।

"क्रांति मानव जाति का अदेय अधिकार है। स्वतंत्रता हर किसी का जन्मसिद्ध अधिकार है। श्रम समाज का वास्तविक आधार है।"

-भगत सिंह

शहीद-ए-आजम भगत सिंह भारत के सबसे प्रतिष्ठित क्रान्तिकारियों में से एक हैं। यह केवल एक 'अमर शहीद' का नाम नहीं बल्कि एक विचार है जिसने बीसवीं सदी के आरम्भ में भारत के युवाओं में विदेशी शासन से मुक्ति पाने की चिंगारी भड़काई थी। एक क्रांतिकारी, विचारक और आदर्शवादी के रूप में भगत सिंह का जीवन छोटा था लेकिन उनके विचार पीढ़ी-दर-पीढ़ी जिए जा रहे हैं। उनकी अदम्य देशभक्ति और देश को स्वाधीन कराने की प्रबल इच्छा ने उन्हें मात्र तेईस वर्ष के एक युवा से, साहस और संकल्प का अमर प्रतीक बना दिया।

भगत सिंह का जन्म सितम्बर 1907 में लायलपुर जिले (अब पाकिस्तान) के बंगा गाँव में एक सिख परिवार में हुआ था। वे देशभक्ति से ओत-प्रोत परिवेश में बड़े हुए। उनके पिता किशन सिंह संधु और चाचा अजित सिंह संधु तथा स्वर्ण सिंह संधु उपनिवेश विरोधी आंदोलनों में सक्रिय थे जो अपनी गतिविधियों की वजह से जेल गए। जन्म के समय भी उनके पिता 'कैनाल कॉलोनाइजेशन बिल' का विरोध करने के कारण जेल में थे। ग़दर आंदोलन से परिवार के गहरे नाते का युवा भगत पर बहुत प्रभाव पड़ा। 1919 में जब वे केवल 12 वर्ष के थे तब उन्होंने अमृतसर के जलियाँवाला

17 वर्ष की आयु

20 वर्ष की आयु

11 वर्ष की आयु

21 वर्ष की आयु

The Tribune.

BHAGAT SINGH, RAJGURU AND SUKHDEV EXECUTED.

"LAST INTERVIEW" WITH RELATIONS.

Shouts Emerge From Jail.

सरदार भगत सिंह की फाँसी की 'द ट्रिब्यून' में 1931 में प्रकाशित समाचार रिपोर्ट

बाग़ हत्याकांड स्थल का दौरा किया जहाँ ब्रिटिश सैनिकों ने जनरल डायर के आदेश पर सैकड़ों निर्दोष भारतीयों को मार डाला था। उस रक्तरंजित भूमि ने उनके मन पर गहरी छाप छोड़ी और उनका संकल्प पहले से अधिक मजबूत हो गया।

भगत सिंह ने प्रारम्भिक पढ़ाई गाँव में की और बाद में लाहौर के डीएवी (दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक) स्कूल में जारी रखी। सरकारी स्कूलों के बहिष्कार के गाँधी जी के आह्वान पर उन्होंने स्कूल जाना छोड़ दिया और लाहौर के नेशनल कॉलेज में प्रवेश लिया। किशोरावस्था में भी वे आयु से कहीं अधिक परिपक्व थे और मातृभूमि के लिए जीवन समर्पित करने का संकल्प रखते थे। जब उनके माता-पिता ने उनका विवाह करने की इच्छा जताई तो उन्होंने दृढ़तापूर्वक इंकार करते हुए कहा, "अगर मेरा विवाह गुलाम भारत में होता है तो मृत्यु ही मेरी दुल्हन होगी।"

साइमन कमीशन के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन के दौरान पुलिस के बर्बर लाठी चार्ज के कारण 1928 में लाला लाजपत राय के निधन का भगत

Hindustan Socialist Republican Army.

NOTICE

सेंट्रल असेंबली हॉल में भगत सिंह द्वारा फेंका गया पर्चा

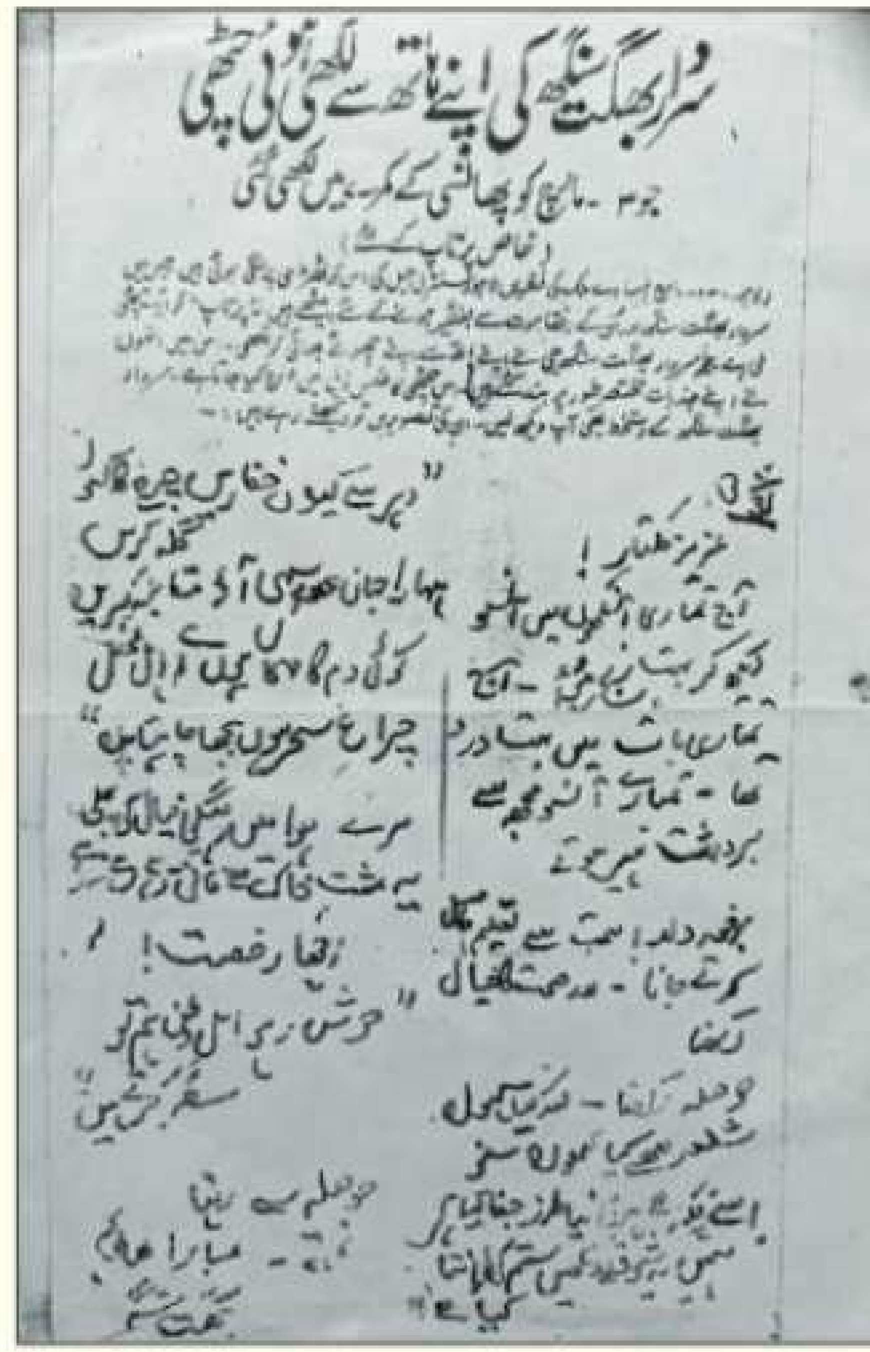

अनुवाद

अज़ीज़ कुलतार,

आज तुम्हारी आँखों में आँसू देखकर बहुत रंज (दुख) हुआ। आज तुम्हारी बात में बहुत दर्द था। तुम्हारे आँसू मुझसे बर्दाश्त नहीं होते। बरखुरदार! हिम्मत से तालीम हासिल करते जाना और सेहत का ख्याल रखना। हौसला रखना। और क्या कहूँ शे'र तुझे क्या लिखूँ सुनो-

"उसे ये फ़िक्र है हरदम नया तर्जे जफ़ा क्या है
हमें ये शौक है देखें सितम की इंतेहा क्या है"
"दहर से क्यों खफ़ा रहें चर्ख का क्यों गिला करें
सारा जहाँ अदू सही आओ मुकाबला करें"
"कोई दम का मेहमाँ हूँ ऐ अहले-महफ़िल
चराग़े सहर हूँ बुझा चाहता हूँ"
"मेरे हवा में रहेगी ख्याल की बिजली
ये मुश्ते-खाक है फ़ानी रहे रहे न रहे"

अच्छा रुखसत!

"खुश रहो एहले-वतन हम तो सफ़र करते हैं"

हौसले से रहना।

नमस्ते

तुम्हारा भाई

भगत सिंह

भगत सिंह का अपने छोटे भाई सरदार कुलतार सिंह को लिखा अंतिम पत्र, जो उन्होंने उर्दू में 3 मार्च, 1931 को जेल में अपने परिवार से अंतिम मुलाकात के बाद लिखा था।

सिंह पर गहरा प्रभाव पड़ा। शिवराम राजगुरु, सुखदेव थापर और चंद्रशेखर आज़ाद के साथ उन्होंने लाजपत राय की मौत का बदला लेने का संकल्प लिया और लाठी चार्ज के लिए जिम्मेदार अधीक्षक जे.एस. स्कॉट को मारने की योजना बनाई। किन्तु दुर्भाग्यवश पहचान में ग़लती हो जाने से एक अन्य अधिकारी सैंडर्स की हत्या हो गई।

पहले तो ब्रिटिश अधिकारियों को पता नहीं चला कि इस कांड के पीछे कौन था, लेकिन जब भगत सिंह के हाथ का लिखा एक पोस्टर मिला जिसमें कांड का उद्देश्य स्पष्ट किया गया था तब उन्हें और उनके साथियों को इस मामले से जोड़ा गया। 8 अप्रैल, 1929 को, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) के सदस्य के रूप में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली में बम फेंके। ये बम हानिकारक नहीं थे और बक़ौल भगत सिंह केवल 'बहरों को सुनाने के' उद्देश्य

से फेंके गए थे। उन्हें लाहौर साज़िश मामले में मृत्युदंड सुनाया गया। कार्यवाही तेज़ी से निपटाने के लिए ब्रिटिश गवर्नर जनरल ने एक विशेष न्यायाधिकरण स्थापित करने का अध्यादेश जारी किया जिसने अभियुक्तों को अपील करने का अधिकार तक नहीं दिया।

23 मार्च, 1931 को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव, लाहौर सेंट्रल जेल में 'इंकलाब जिन्दाबाद!' का नारा बुलंद करते हुए फाँसी के फंदे पर झूल गए। भगत सिंह के लिए, देश के लिए मरना कोई त्रासदी नहीं बल्कि मातृभूमि के प्रति प्रेम का सबसे बड़ा उत्सव था। फाँसी के फंदे की ओर बढ़ते समय उनके गाए गीत 'मेरा रंग दे बसंती चोला' ने उन्हें सदा के लिए अमर कर दिया।

भगत सिंह के लेखों से पता चलता है कि वे न्याय और समानता के पक्षधर थे। उन्होंने जीवन के अंतिम दो वर्ष जेल में काटते हुए ख़ूब लेखन किया। जेल में रहते हुए उनके विचार और भी गहरा गए थे। उनकी 'जेल नोटबुक' बताती है कि उनकी सोच कितनी असाधारण थी, उनका मन समाजवाद, धर्म, न्याय, ग़रीबी और क्रांति जैसे प्रश्नों से जूझता था। उनके लेख 'मैं क्यों नास्तिक हूँ' में जहाँ उनकी बौद्धिक ईमानदारी का पता चलता है वहीं वे अंधविश्वास को भी नकारते हैं। उन्होंने श्रम की गरिमा, आत्महत्या

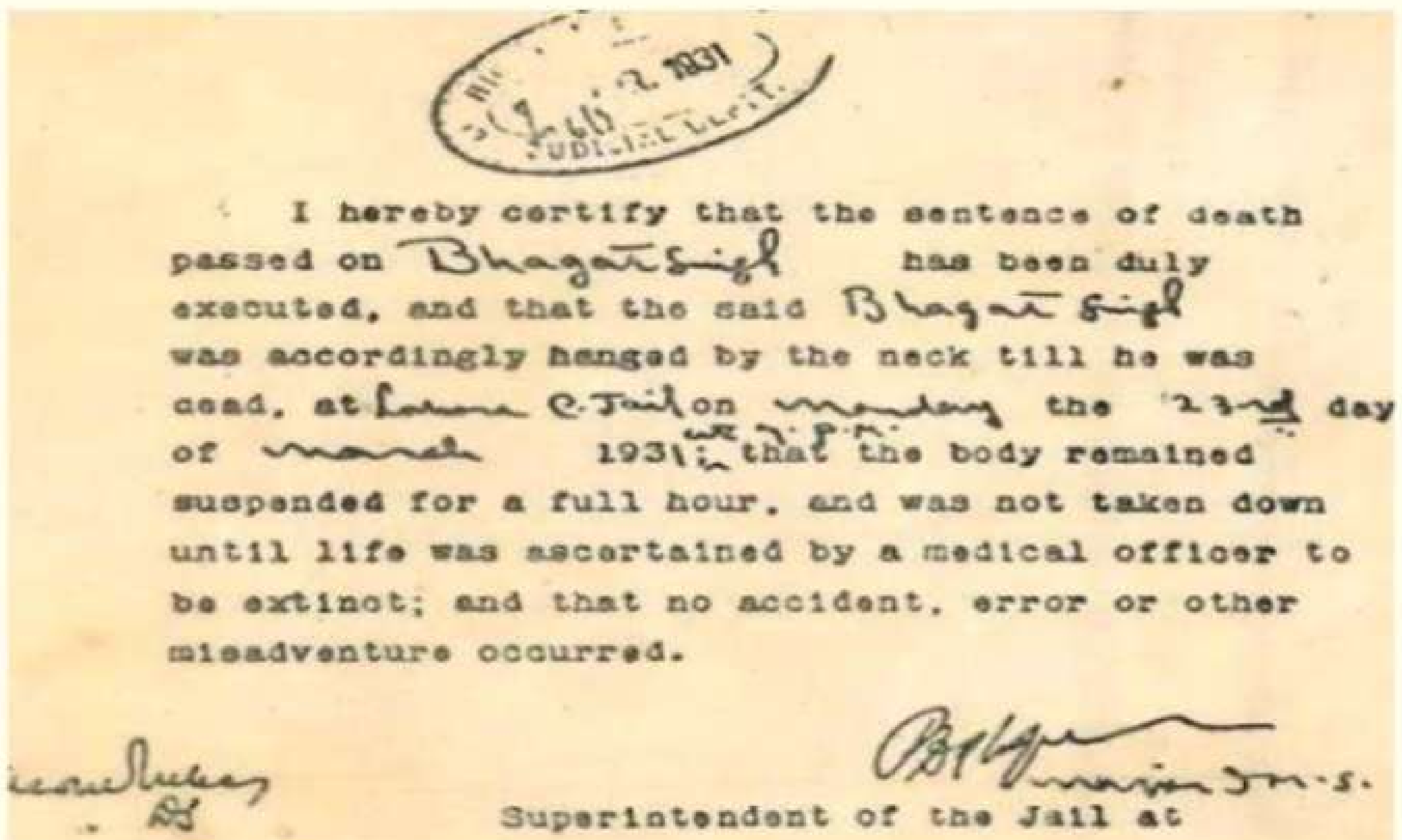

I hereby certify that the sentence of death passed on Bhagat Singh has been duly executed, and that the said Bhagat Singh was accordingly hanged by the neck till he was dead, at Lahore C. Jail on Monday the 23rd day of March 1931; that the body remained suspended for a full hour, and was not taken down until life was ascertained by a medical officer to be extinct; and that no accident, error or other misadventure occurred.

Superintendent of the Jail at

लाहौर की सेंट्रल जेल से भगत सिंह का अपने (बचपन के) मित्र जयदेव गुप्ता को लिखा पत्र

की निरर्थकता और क्रांतिकारी का अपने उद्देश्य के लिए जीना और सहना ही कर्त्तव्य है, के बारे में प्रभावशाली ढंग से लिखा। वे कहते थे कि क्रांतिकारी कृत्यों को गर्व से स्वीकारना चाहिए क्योंकि इन्हें नकारना उनका राजनीतिक उद्देश्य कमज़ोर कर देगा। उनकी रचनाएँ दिखाती हैं कि वे केवल कर्मशील नहीं, बल्कि ऐसे विचारक भी थे जो अपने समय से कहीं आगे की सोचते थे।

जन्म के एक शताब्दी बाद भी शहीद भगत सिंह केवल इतिहास का अध्याय नहीं, एक जीते-जागते आदर्श हैं, एक लौ हैं जो आज भी भारत के युवाओं का मार्ग प्रकाशित करती है। उनके अनेक चित्रों में वो अमर चेहरा देख आज भी गर्व और श्रद्धा की अनुभूति होती है। उनके शब्द आज भी न्याय और समानता के लिए बहस, चिंतन और आंदोलनों को प्रेरित करते हैं। समान और जागरूक भारत का उनका सपना आज भी समाज बदलने की इच्छा रखने वालों का मार्गदर्शन करता है। एक शहीद से अधिक, भगत सिंह एक शाश्वत आदर्श हैं—सदा के लिए युवा प्रतीक।

लता मंगेशकर

सुर, संस्कृति और संवेदना का संगम

भारत की आत्मा में जब भी संगीत गूँजता है, तो उसमें लता मंगेशकर की आवाज़ ज़रूर सुनाई देती है। लता मंगेशकर सिर्फ़ एक गायिका नहीं बल्कि एक अहसास का नाम है।

लता मंगेशकर का संगीत समय की सीमाओं से परे है। वो हर मौसम में, हर पीढ़ी में और हर ज़ुबान पर गूँजता रहेगा।

- लता मंगेशकर को पूरी दुनिया प्यार से लता दीदी के नाम से जानती है। लता जी भारतीय संगीत की वो आवाज़ थीं जो आज भी हर दिल में बसी हुई है। उनका जन्म 28 सितम्बर, 1929 को इंदौर में हुआ। उनके पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर भी एक प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक थे।
- लता जी ने महज़ 13 साल की उम्र में गाना शुरू कर दिया था और आने वाले दशकों में उन्होंने 30 से अधिक भाषाओं में हज़ारों गीत गाए। उनकी आवाज़ में मौजूद मिठास, नज़ाकत और सच्चाई किसी जादू से कम नहीं है।
- लता मंगेशकर का संगीत केवल मनोरंजन नहीं था। वह देशभक्ति, प्रेम और इंसानियत का संदेश था। उनका गाया गीत 'ए मेरे वतन के लोगों' सुनकर आज भी आँखें नम हो जाती हैं।
- लता जी का संगीत भारतीय परम्परा और सभ्यता से गहराई से जुड़ा हुआ है। चाहे भजन हों या ग़ज़लें, लोकगीत हों या फिल्मी गीत, ऐसा महसूस होता है कि उन्होंने हर रूप में अपनी आत्मा डाल दी।
- लता जी ने अपने लम्बे करियर में मोहम्मद रफ़ी, किशोर कुमार, मुकेश और मन्ना डे जैसे गायकों के साथ असंख्य यादगार गीत गाए। उनकी जोड़ी संगीत के हर दौर में अमर रही।
- लता मंगेशकर को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिले। भारत रत्न, पद्म भूषण, पद्म विभूषण और दादा साहब फाल्के पुरस्कार जैसे सम्मान उनके नाम हैं।
- अयोध्या में लता मंगेशकर के सम्मान में बनाया गया लता मंगेशकर चौक उनकी सुरीली विरासत का प्रतीक है। यहाँ स्थापित वीणा की प्रतिमा उनके अमर संगीत और सांस्कृतिक योगदान को नमन करती है।
- लता जी ने न केवल हिन्दी बल्कि मराठी, बंगाली, तमिल, गुजराती, उर्दू और कई अन्य भाषाओं में गाकर संगीत की सीमाएँ मिटा दीं। हर भाषा में उनकी भावनात्मक गहराई और आत्मीयता सांस लेती नज़र आती है।

शक्ति के साथ सफर

महासागरों को जीतने वाली बेटियाँ

जब साहस समुद्र से मिलता है, तो लहरों पर महानता की कहानियाँ लिखी जाती हैं। लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना के. और लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा ए. की नाविका सागर परिक्रमा-II पूरी करने के बाद भारतीय तटों पर वापसी ऐसा ही एक क्षण था, जिसने पूरे देश को गर्व से भर दिया। नौसेना की इन दो महिला अधिकारियों ने "डबल-हैंडेड मोड" में विश्व परिक्रमा करने वाली भारत की पहली जोड़ी बनने का गौरव प्राप्त किया – केवल पवन और पाल की शक्ति के सहारे। यह यात्रा केवल रोमांच की नहीं थी, यह साहस, दृढ़ संकल्प और नारी शक्ति की भावना का प्रतीक थी।

नाविका सागर परिक्रमा-II : सीमाओं के पार सफर

नाविका सागर परिक्रमा के दूसरे संस्करण में लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना और लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा ने नौकायन पोत INSV तारिणी पर आठ महीनों (2 अक्तूबर, 2024 से 29 मई, 2025 तक) में 25,000 से अधिक नॉटिकल मील की यात्रा पूरी की। उन्होंने भारत से प्रस्थान किया और फ्रीमेंटल (ऑस्ट्रेलिया), लिट्टलटन (न्यूज़ीलैंड), पोर्ट स्टेनली (फ़ॉकलैंड द्वीप समूह) और केप टाउन (दक्षिण अफ्रीका) पर ठहराव लिया, फिर मातृभूमि लौटीं। इस दौरान उन्होंने तीन महासागरों और तीन महान केप्स को पार किया, और पृथ्वी की कुछ

सबसे कठोर जलवायु परिस्थितियों का सामना किया।

यात्रा के हर चरण में उनके साहस और कौशल की परीक्षा हुई। उन्होंने 50 नॉट (93 किलोमीटर प्रति घंटा) की तेज हवाओं, शून्य से नीचे तापमान और उफनती लहरों का सामना किया। सबसे कठिन हिस्सा लिट्टलटन से पोर्ट स्टेनली तक का तीसरा चरण था, जिसमें उन्होंने खतरनाक ड्रेक पैसेज पार किया, तीन चक्रवातों का सामना किया और केप हॉर्न का चक्कर लगाया- जो किसी भी नाविक के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण मार्गों में से एक माना जाता है। फिर भी, दोनों अधिकारियों ने अटूट दृढ़ता दिखाई, अपने आत्मविश्वास, अनुशासन और सामर्थ्य का परिचय दिया।

उनकी यात्रा केवल समुद्र पर जीवित रहने की कहानी नहीं थी। हर बंदरगाह पर वे भारत की सद्भावना दूत बनकर पहुँचीं। उन्होंने सांसदों, विद्यार्थियों, नौसैनिक कैडेटों, भारतीय प्रवासियों और

विश्वविद्यालय के शिक्षकों से मुलाकात की, अपने अनुभव साझा किए और उन्हें प्रेरित किया। वह गर्व का क्षण था जब उन्हें पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया की संसद में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया, जहाँ उनकी उपलब्धि को महिला सशक्तीकरण और साहस के प्रतीक के रूप में सम्मानित किया गया। तूफानी हवाओं और लम्बी रातों के बीच, उन्होंने भारत का तिरंगा ऊँचा फहराया और पूरी दुनिया को दिखाया कि भारतीय महिलाएँ क्या कर सकती हैं।

नाविका सागर परिक्रमा-I: सफ़र की शुरुआत

इस उपलब्धि की जड़ें वर्ष 2017 में हैं, जब पहली नाविका सागर परिक्रमा की शुरुआत हुई थी। यह पहला भारतीय सर्व-महिला दल था जिसने INSV तारिणी पर विश्व की परिक्रमा की। इस टीम का नेतृत्व लेफ्टिनेंट कमांडर वर्तिका जोशी ने किया था, और इसमें लेफ्टिनेंट कमांडर प्रतिभा जामवाल, स्वाती पी., लेफ्टिनेंट ऐश्वर्या बोड्डापाटी, एस. विजया देवी और पायल गुप्ता शामिल थीं।

उनकी यात्रा 10 सितम्बर, 2017 को शुरू हुई और 21 मई, 2018 को समाप्त हुई। 254 दिनों में उन्होंने 22,000 से अधिक नॉटिकल मील की दूरी तय की, और फ्रीमेंटल, लिट्टलटन, पोर्ट स्टेनली, केप टाउन और पोर्ट लुईस में पड़ाव डाला। उन्होंने दो बार भूमध्य रेखा पार की, सभी देशांतरों को पार किया, और तीन महान केप्स -लीऊविन, हॉर्न और गुड होप को पार किया।

नए क्षितिजों की खोज

नाविका सागर परिक्रमा-I और II ने मिलकर दुनिया को दिखाया है कि भारत की बेटियाँ किसी भी सीमा को जीतने में सक्षम हैं। छह अग्रणी महिलाओं से लेकर उन दो अधिकारियों तक जिन्होंने "डबल-

हैंडेड मोड" में यह यात्रा की, इन सबने साबित किया है कि समुद्र उन लोगों का है जो साहस करते हैं।

उनका साहस और धैर्य अनगिनत लोगों को बड़ा सपना देखने के लिए प्रेरित कर चुका है। उन्होंने केवल महासागरों को नहीं पार किया; उन्होंने सीमाएँ तोड़ीं, और यह सिद्ध किया कि आपके भीतर विद्यमान शक्ति आपको कहीं भी पहुँचा सकती है।

"शक्ति के साथ सफर" केवल इनकी कहानी नहीं है बल्कि, यह भारत की कहानी है, जो अनिश्चित लहरों पर सवार साहस, सशक्तीकरण और गर्व की गाथा सुनाती है।

भारत की अमूर्त धरोहरें

छठ पूजा को मिलेगी वैश्विक पहचान

भारत एक ऐसा देश है जहाँ हर पर्व, हर रिवाज और हर परम्परा में जीवन की ऊर्जा बहती नजर आती है। ये परम्पराएँ दरअसल हमारी संस्कृति की आत्मा हैं जो हमें पीढ़ियों से जोड़ती आई हैं। अब यही जीवंत धरोहरें वैश्विक मंच पर भी अपनी जगह बना रही हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में 'मन की बात' में बताया कि भारत सरकार छठ पूजा को UNESCO की Intangible Cultural Heritage List में शामिल करवाने के लिए प्रयासरत है।

छठ पूजा न केवल बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश का त्योहार है बल्कि अब यह भारत के कोने-कोने में और दुनिया भर में बसे भारतीयों के बीच भी मनाया जाता है। यह पर्व सूर्यदेव को समर्पित है जिसमें डूबते और उगते सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। यह प्रकृति, आस्था और मानव संवेदना का अद्भुत संगम है।

भारत की धरोहरें जो दुनिया तक पहुँचीं

भारत की संस्कृति अपनी विविधता, परम्पराओं और कलात्मक अभिव्यक्तियों के लिए पूरी दुनिया में जानी जाती है। यही कारण है कि भारत की कई अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरें (Intangible Cultural Heritage) यूनेस्को की सूची में शामिल होकर वैश्विक पहचान हासिल कर चुकी हैं। ये धरोहरें भारत की आध्यात्मिकता, सामूहिक भावना और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रमाण हैं। वर्ष 2008 में कुटियट्टम (संस्कृत नाट्य परम्परा), वैदिक मंत्रपाठ की परम्परा और रामलीला अर्थात रामायण के पारम्परिक मंचन को इस सूची में शामिल किया गया। इसके बाद 2009 में गढ़वाल हिमालय का *रम्मान उत्सव*, 2010 में *छऊ नृत्य*, राजस्थान के *कालबेलिया लोकगीत* और नृत्य तथा केरल के *मुदियेट्टू नाट्यकला* को यह सम्मान मिला। वर्ष 2012 में लद्दाख के बौद्ध

मंत्रोच्चार, 2013 में मणिपुर के *संकीर्तन* और 2014 में पंजाब के जंडियाला गुरु के ठठेरे समुदाय की *पारम्परिक पीतल और ताँबे के बर्तन बनाने की कला* को इस सूची में स्थान मिला।

भारत की इस सांस्कृतिक यात्रा में 2016 में *योग*, 2017 में *कुम्भ मेला* और 2021 में *दुर्गा पूजा* को वैश्विक मान्यता प्राप्त हुई। वहीं 2023 में *गरबा नृत्य* और 2024 में *नवरोज* इस सूची में जोड़े गए। इन धरोहरों का UNESCO की Intangible Cultural Heritage List यानी सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल होना भारत के लिए गर्व का विषय है। यह इस बात का प्रतीक है कि भारत की परम्पराएँ सीमाओं और भाषाओं से परे जाकर पूरी दुनिया को जोड़ने की क्षमता रखती हैं।

UNESCO सूची में शामिल होने का महत्त्व

UNESCO की यह सूची 2003 में बनी थी ताकि ऐसी परम्पराओं को संरक्षित किया जा सके जो 'जीवित संस्कृति' का हिस्सा हैं। यानी जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोगों के दिलों में बसती हैं। इन परम्पराओं में त्योहार, लोकनृत्य, पारम्परिक संगीत, हस्तशिल्प और सामाजिक अनुष्ठान शामिल हैं। जब कोई परम्परा इस सूची में शामिल होती है तो उसके संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए अंतरराष्ट्रीय सहायता और सहयोग हासिल होता है।

आज भारत सरकार संस्कृति मंत्रालय और विभिन्न राज्यों के माध्यम से इस दिशा में सक्रिय है। दुर्गा पूजा के बाद अब छठ पूजा को भी इस सम्मान तक पहुँचाने की कोशिश जारी है। यह न सिर्फ़ एक धार्मिक अनुष्ठान है बल्कि पर्यावरण, परिवार और समाज के प्रति भारतीय दृष्टिकोण का सुंदर प्रतीक है।

संस्कृति से संवाद का नया दौर

छठ पूजा के दौरान घाटों पर गूँजने वाले गीत, महिलाओं का संयम और श्रद्धा तथा सूर्य को अर्घ्य देने का दृश्य अब न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ता है। UNESCO की सूची में जब *छठ पूजा* शामिल होगी तो यह भारत की उस जीवित परम्परा की विश्वस्तरीय मान्यता होगी जो 'लोक' और 'प्रकृति' के बीच 'पवित्र रिश्ता' क़ायम करती है।

भारत की ये अमूर्त धरोहरें हमें यह याद दिलाती हैं कि हमारी संस्कृति केवल अतीत की कहानी नहीं है। यह हमारे वर्तमान की पहचान और हमारे भविष्य की प्रेरणा है। जब भारत की परम्पराएँ वैश्विक मंच पर सम्मान पाती हैं तो यह सिर्फ़ गौरव की बात नहीं, बल्कि उस विरासत के पुनर्जागरण का संकेत है जिसे हमने सहेज कर रखा है।

फर्श से अर्श तक

हथकरघा और हस्तशिल्प की नई पहचान

भारत की सांस्कृतिक विरासत का ताना-बाना करघे पर बुना गया है और इसके रंग कारीगरों के हाथों से भरे गए हैं। सदियों से जीवंत परम्पराओं के संरक्षक के रूप में इस क्षेत्र ने हमारे समाज की आत्मा को सजीव रूप दिया है। परंतु स्वतंत्रता के बाद के दशकों में यह जगमगाता उद्योग बड़े स्तर पर मशीनी उत्पादों की चकाचौंध में कुछ फीका पड़ गया था। आज हालांकि इसमें एक पुनर्जागरण चल रहा है-एक ऐसा आंदोलन जो परम्परा और आधुनिक नवाचार के संगम से इस क्षेत्र को एक नया स्वरूप प्रदान कर रहा है।

इस पुनर्जागरण का दार्शनिक आधार 'स्वदेशी' का सिद्धांत है, जिसे महात्मा गाँधी ने अदम्य उत्साह से अपनाया था। गाँधीजी के लिए 'खादी' केवल एक कपड़ा नहीं था; बल्कि आत्मनिर्भरता का प्रतीक, आर्थिक स्वतंत्रता का माध्यम और राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने वाला धागा था। कुछ दशकों की गिरावट के बाद, पिछले दस वर्षों में खादी ने फिर से नया जीवन पाया है—अब यह केवल बीते युग की याद नहीं, बल्कि जागरूक और देशभक्ति

से ओतप्रोत उपभोग का प्रतीक बन चुकी है। इसकी बिक्री में वृद्धि इस बात का प्रमाण है कि देश अपने स्वदेशी गौरव को पुनः खोज रहा है। गाँधी जयंती पर खादी उत्पाद खरीदने और गर्व से स्वदेशी के नारे की पहल, तथा #VocalForLocal जैसे अभियानों से यह केवल आर्थिक निर्णय नहीं बल्कि सांस्कृतिक स्वाभिमान का सशक्त उद्घोष बन गया है।

फिर भी, यह पुनर्जागरण केवल चरखे के प्रतीक तक सीमित नहीं है। आज का भारत अपने हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र को नई दृष्टि से देख रहा है, जहाँ प्राचीन बुद्धिमत्ता को वैश्विक बाजार के अनुरूप पुनर्परिभाषित किया जा रहा है। यह क्षेत्र ऐसे परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, जहाँ इसके मौलिक मूल्य को आज रणनीतिक रूप से डिज़ाइन

"हथकरघा परिवार में पले-बढ़े होने के कारण हमने केले और संबू घास जैसे प्राकृतिक रेशों को चुना, ताकि पर्यावरण अनुकूल योगा मैट बना सकें। हम स्थानीय बुनकरों को सीधे उचित मजदूरी और स्थिर रोज़गार देकर सशक्त बनाते हैं। आज 200 से अधिक परिवार हमारे साथ जुड़े हैं। हमारा उद्देश्य पारम्परिक कला को आधुनिक नवाचार से जोड़ना है, ताकि यह विरासत आज के बाज़ार में भी जीवित और प्रासंगिक बनी रहे।"

-प्रेम (याज़ नेचुरल्स, तमिलनाडु)

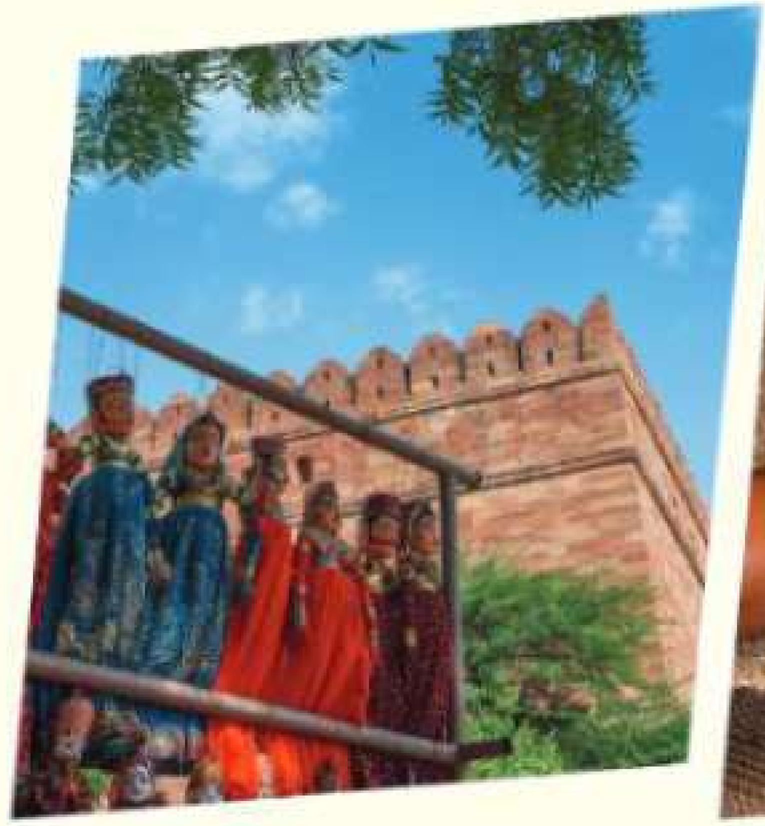

में बदलाव करके और सतत उत्पादन के माध्यम से सशक्त किया जा रहा है। कारीगर और उद्यमी अब साझेदार बनकर काम कर रहे हैं, यह संगम हमारे युग की रचनात्मकता का प्रतीक है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत के स्वदेशी करघा उद्योग को पुनर्जीवित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। *वोकल फॉर लोकल* और स्वदेशी की भावना को *आत्मनिर्भर भारत* के निर्माण का आधार बनाते हुए उन्होंने कई बार इस क्षेत्र की नवोन्मेषी पहलों की सराहना की है। 'मन की बात' के 126वें संस्करण में उन्होंने याज़ नेचुरल्स के अशोक जगदीशन और प्रेम सेल्वराज, तथा झारखंड के जोहारग्राम के आशीष सत्यव्रत साहू जैसे उद्यमियों की प्रशंसा की, जिन्होंने परम्परा और नवाचार को जोड़कर भारत की सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक पहचान दिलाई है।

"अपने पुश्तैनी हथकरघा समुदाय की गिरावट देखकर मैंने कॉर्पोरेट नौकरी छोड़ दी और प्राकृतिक घास से टिकाऊ योगा मैट बनाना शुरू किया। हमारा लक्ष्य परम्परा और नवाचार को जोड़ना है—जैसा कि हमारे नए 'स्मार्ट योगा मैट' में देखा जा सकता है—और एक 5F हथकरघा ग्राम स्थापित करना है जिससे हज़ारों कारीगरों को लाभ मिले।"

-अशोक (याज़ नेचुरल्स, तमिलनाडु)

तमिलनाडु के याज़ नेचुरल्स की प्रेरणादायक यात्रा अशोक जगदीशन और प्रेम सेल्वराज जैसे दूरदर्शी लोगों से शुरू हुई। अपने कॉर्पोरेट करियर को छोड़कर उन्होंने स्थानीय संसाधनों की क्षमता को पहचाना। घास और केले के रेशे से योगा मैट बनाना और उन्हें प्राकृतिक रंगों से रंगना- इनके उत्पाद आज वैश्विक बाज़ार में वहनीयता और कल्याण के प्रतीक बन चुके हैं। यह पहल केवल पर्यावरण अनुकूल उत्पाद बनाने की नहीं, बल्कि सामुदायिक सशक्तीकरण की मिसाल है-जिसने सैकड़ों परिवारों को रोज़गार और गरिमा दी है। यह दर्शाता है कि 'परम्परा' जब 'नवाचार' के साथ जुड़ती है, तो ग्रामीण भारत के पुनर्निर्माण की सशक्त ताकत बन सकती है।

इसी तरह, झारखंड के आशीष सत्यव्रत साहू जैसे उद्यमी इस कहानी को

"मैं झारखंड का हूँ, और मैंने जोहारग्राम शुरू किया ताकि हमारी आदिवासी बुनाई को वैश्विक मंच मिले। हमने चुनौतियों को अपनी ताकत बनाया। जैसे साल के पत्तों से पर्यावरण अनुकूल पैकेजिंग तैयार करना और हर हस्तनिर्मित वस्त्र की विशिष्टता का उत्सव मनाना। सबसे बड़ा संतोष तब मिलता है जब हमारे कारीगरों को अपने काम की पहचान पर गर्व महसूस होता है।"

-आशीष (जोहारग्राम, झारखंड)

वैश्विक स्तर पर ले जा रहे हैं। अपने ब्रांड जोहारग्राम के माध्यम से उन्होंने अपने क्षेत्र की समृद्ध आदिवासी बुनाई परम्परा को अत्यंत कुशलता से ऐसे परिधानों में रूपांतरित किया है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। उनके कार्य ने उन जटिल बुनावटों और जीवंत रंगों को विश्व मंच पर पहुँचाया है जो कभी केवल गाँवों तक सीमित थे। यह केवल निर्यात नहीं है -यह एक सांस्कृतिक संवाद है, जो विश्व को भारत के आदिवासी समुदायों में निहित गहन कला-संवेदना से परिचित कराता है और उनकी विरासत को सराहना के साथ-साथ आर्थिक स्थिरता भी प्रदान करता है।

अंततः, भारत के हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्र की कहानी आज फिर से लिखी जा रही है। यह आंदोलन स्वदेशी की आत्मा का सम्मान करते हुए आधुनिक युग की आवश्यकताओं को अपनाता है। जब कारीगर की शाश्वत कला नवोन्मेषी दृष्टि के साथ जुड़ती है, तब यह क्षेत्र अपनी सीमाओं से परे निकल जाता है। अब यह केवल विरासत को संरक्षित करने की बात नहीं, बल्कि उसे जीवंत, समावेशी और वैश्विक अर्थव्यवस्था का अभिन्न हिस्सा बनाने

की यात्रा है। यही है 'फर्श से अर्श तक' का सच्चा अर्थ–जहाँ हर हाथ से बुना वस्त्र और हर हस्तनिर्मित कलाकृति भारत की अनंत सृजनशीलता और भविष्य के लिए आत्मविश्वास का गर्वपूर्ण प्रतीक बन जाती है।

(माननीय प्रधानमंत्री का वस्त्र उद्योग के लिए 5F दृष्टिकोणः "Farm to Fibre, Fibre to Factory, Factory to Fashion, Fashion to Foreign" – यानी खेत से रेशे तक, रेशे से कारखाने तक, कारखाने से फैशन तक और फैशन से विदेश तक।)

उत्सवों में स्थानीयता की छाप

स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा

भारत में होली, दुर्गा पूजा, दशहरा, दीवाली, पोंगल और ईद जैसे विभिन्न त्योहार हमारी सांस्कृतिक विरासत के जीवंत उदाहरण हैं जिनका हमारे स्थानीय शिल्पियों और उनके शिल्प से गहरा नाता है।

सरकार की *'वोकल फॉर लोकल'* पहल लोगों को इस स्वदेशी पारिस्थितिकी तंत्र का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

1. स्थानीय उत्पाद ख़रीद कर हम केवल अपनी ज़रूरत पूरी नहीं करते; हम सदियों से चली आ रही कला के विभिन्न रूपों जैसे हैंडलूम वस्त्र, टेराकोटा और हस्तशिल्प के संरक्षण में भी हाथ बँटाते हैं।

2. यह सीधा समर्थन, शिल्पी समुदायों की स्थायी आजीविका सुनिश्चित करता है और ग्रामीण क्षेत्रों से कुशल श्रमिकों का पलायन रोकने में मदद देता है।

Atmanirbhar Bharat

Swadesi kapda, Desh ki Shaan, Yahi hain Bharat ki Pehchan

इसी से प्रेरित होकर वस्त्र मंत्रालय ने हैंडलूम, हस्तशिल्प और कपड़ा उत्पादों की घरेलू माँग बढ़ाने के लिए इस वर्ष स्वदेशी अभियान आरम्भ किया है।

इस अभियान का उद्देश्य घरेलू खपत बढ़ाना और भारतीय वस्त्रों को विशेष रूप से युवाओं और शहरी उपभोक्ताओं के बीच 'गौरव' और 'शैली के प्रतीक' के रूप में फिर से स्थापित करना है।

त्योहारों के इस मौसम में आइए, हम अपनी सच्ची 'स्वदेशी' भावना बनाए रखें। फैक्ट्री में बने दीयों की जगह स्थानीय शिल्पियों के बने दीये ख़रीद कर या आयातित कपड़ों की जगह हैंडलूम साड़ी को प्राथमिकता देकर हम उन शिल्पियों को सशक्त करते हैं जो भारत की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षक हैं। ऐसे सचेत विकल्प चुनकर हम सीधे तौर पर अपनी सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने और उसे गढ़ने वाले हाथों को बल देते हैं।

दुर्गा पूजा 2025

यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता प्राप्त भव्य दुर्गा पूजा उत्सव भारत की जीवंत परम्पराओं और सामूहिक आनंद का प्रतीक है। जैसा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में 'मन की बात' में कहा, "हमारे त्योहार और उत्सव ही भारत की संस्कृति को जीवित और समृद्ध बनाए रखते हैं।" यह फोटो फीचर दुर्गा पूजा की आत्मा को, इसकी कलात्मकता को और उस एकजुट करने वाली ऊर्जा को दर्शाता है जो दुनिया भर के लोगों को प्रेरित करती रहती है।

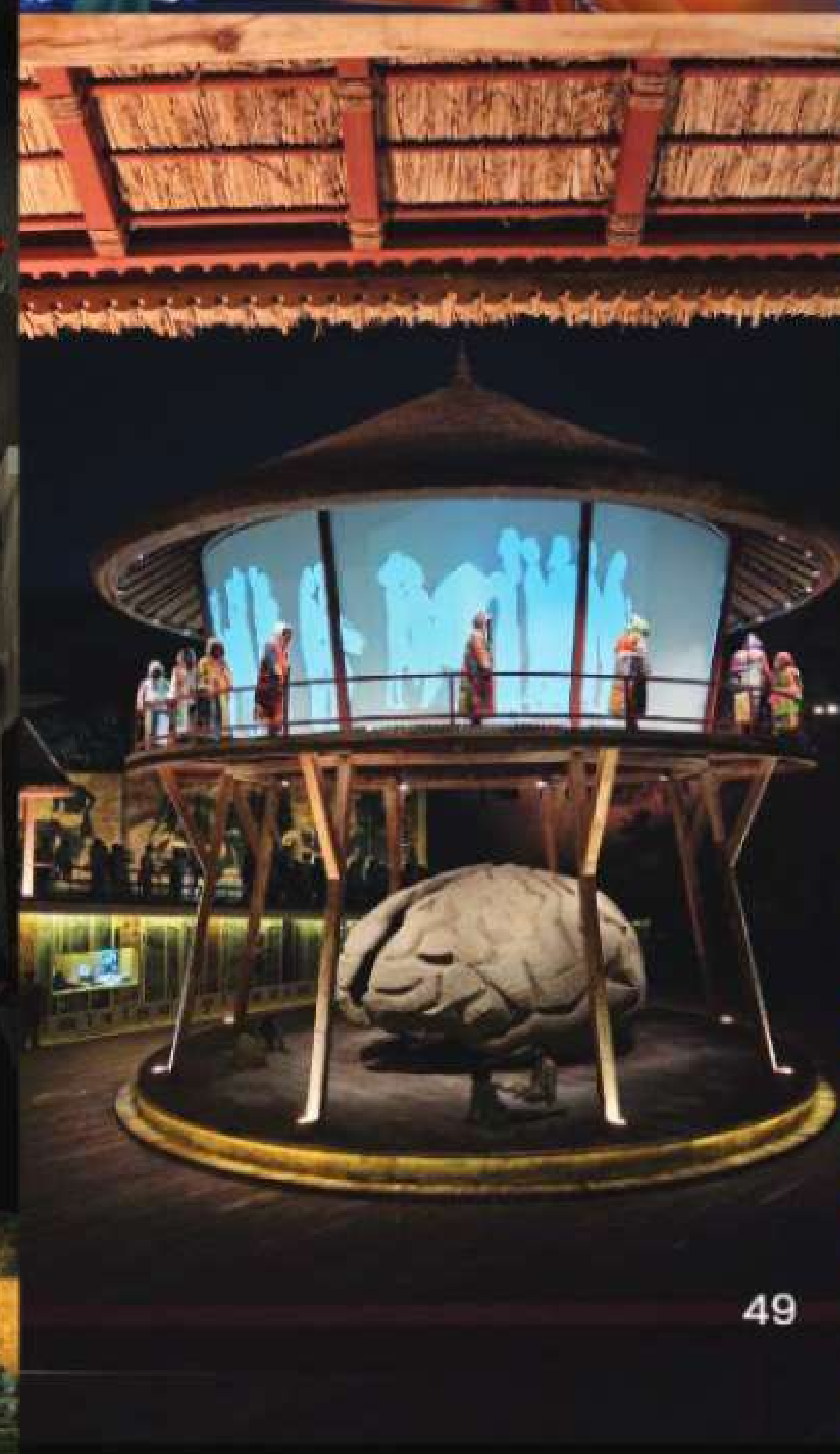

महात्मा गाँधी स्वदेशी के प्रतीक

महात्मा गाँधी के दिल में स्वदेशी की भावना धड़कती थी। उन्होंने एक साधारण से सूत को राष्ट्र की आवाज बना दिया। उन्होंने 'चरखा' को 'शक्ति' का प्रतीक और 'खादी' को 'आज़ादी' का वस्त्र बनाया। उनके लिए आत्मनिर्भरता केवल एक विचार नहीं अपितु भारत की आत्मा में प्राण फूँकने का मार्ग थी। उनका जीवन हर भारतीय को याद दिलाता है कि असली आज़ादी आत्मविश्वास, अपनी शक्ति पर भरोसा, और अपने देश की जड़ों पर गर्व करने से आरम्भ होती है।

चम्पारण सत्याग्रह (1917) के दौरान गाँधीजी ने 'पंचामृत' अर्थात् पाँच अमृत तत्त्वों – सत्य और साहस, एकता, स्वच्छता और शिक्षा, नारी सम्मान, तथा स्वनिर्मित वस्त्र धारण करने – के माध्यम से लोगों को उनकी शक्ति का बोध कराया। उन्होंने महिलाओं की कठिनाइयाँ देखकर उन्हें स्वयं सूत कातने और वस्त्र बुनने को प्रेरित किया। इसी साधारण से कार्य से जन्म हुआ खादी का और यह स्वदेशी एवं आत्मनिर्भरता का चिरस्थायी प्रतीक बन गया।

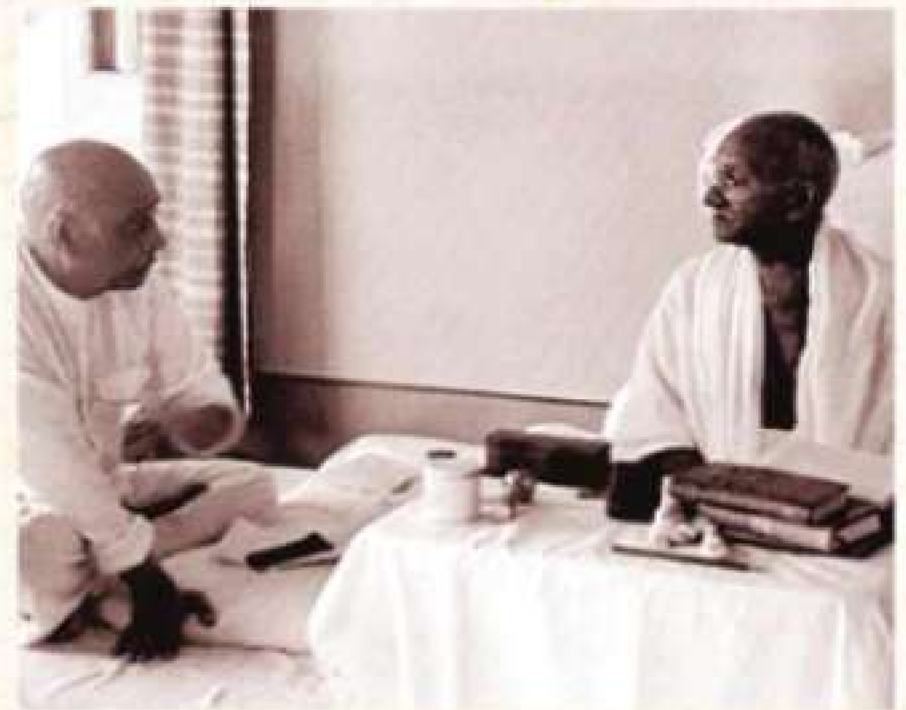

असहयोग आंदोलन (1920–22) भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर था। गाँधी जी ने आह्वान किया कि लोग शांति के मार्ग पर चलते हुए ब्रिटिश शासन का बहिष्कार करें, सरकारी उपाधियों का त्याग करें, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करें, ब्रिटिश संस्थानों से अलग हों और स्वदेशी को अपनाएँ। इस आंदोलन ने पूरे देश को एकजुट किया और यह संदेश दिया कि सच्ची स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और सामूहिक प्रयास से ही प्राप्त होती है।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34) की शुरुआत प्रसिद्ध *दांडी मार्च* से हुई जब गाँधीजी ने नमक क़ानून तोड़कर यह दर्शाया कि भारत को अपनी आवश्यक वस्तुएँ स्वयं बनाने का अधिकार है। यह आंदोलन विरोध प्रदर्शनों, हड़तालों और ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार के रूप में पूरे देश में फैल गया। खादी और स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देकर यह आंदोलन आर्थिक स्वतंत्रता का प्रतीक बना जिसने सिद्ध किया कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी एकता और अपने संसाधनों पर निर्भरता में निहित है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष

सेवा और राष्ट्र निर्माण की एक सदी

1925 में विजयदशमी के दिन डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) ने, भारत की राष्ट्रीय चेतना निर्माण के 100 वर्ष पूरे कर लिए हैं। यह संगठन एकता, अनुशासन और सेवा की भावना को प्रोत्साहित करते हुए आज भी देश के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने शताब्दी संदेश में, आरएसएस को "समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण को समर्पित आंदोलन" बताया। संगठन की 100 वर्ष की यात्रा को नमन करते हुए उन्होंने कहा, "यही सपना साकार करने के लिए असंख्य स्वयंसेवकों ने अपना जीवन समर्पित किया है।"

शताब्दी वर्ष के अवसर पर संगठन की एक सौ वर्ष की यात्रा, सिद्धांतों और योगदानों की प्रमुख झलकियाँ इस प्रकार हैं।

संक्षेप में आरएसएस-

- **स्थापना :** डा. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा 1925 में स्थापित
- **अवसर :** 2025 में विजयदशमी के दिन आरएसएस का शताब्दी वर्ष समारोह
- **पथप्रदर्शक सिद्धांत :** सेवा परमो धर्मः - 'सेवा सर्वोच्च कर्त्तव्य'
- **मूल उद्देश्य :** अनुशासित, एकजुट और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाना
- **स्वयंसेवक नेटवर्क :** देश और विदेशों में लाखों स्वयंसेवक
- **सेवा केन्द्रित :** बाढ़, सूखा, भूकम्प के दौरान राहत कार्यों और सामाजिक कार्यक्रमों में भागीदारी
- **सामाजिक प्रभाव :** अनुशासन, उत्तरदायित्त्व और निःस्वार्थ सेवा को बढ़ावा
- **देन :** पीढ़ियों को सामुदायिक सेवा और राष्ट्र निर्माण की निरंतर प्रेरणा

अलविदा असम की धड़कन ज़ुबीन गर्ग

डॉ हिमंत बिस्वा सर्मा
मुख्यमंत्री, असम

सितम्बर 2025 के 'मन की बात' संस्करण में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सुप्रसिद्ध कलाकार ज़ुबीन गर्ग के असमय निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। संगीत की इस अप्रतिम प्रतिभा को उन्होंने असम की संस्कृति से गहराई से जुड़े एक गायक के रूप में याद किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि ज़ुबीन गर्ग सदा हमारी स्मृतियों में जीवित रहेंगे और उनका संगीत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा। उनके इन शब्दों ने हर असमवासी का दिल छू लिया और यह भी बताया कि ज़ुबीन का योगदान केवल असम तक सीमित नहीं था अपितु पूरे राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करने वाला था। ज़ुबीन की आवाज़ ने असम को भारत के दिल में बसाते हुए एक बार फिर साबित कर दिया कि कला न क्षेत्र की सीमा जानती है और न भाषा की।

ज़ुबीन गर्ग के असमय निधन की ख़बर ने पूरे असम को गहरे शोक में डुबो दिया। देश ही नहीं विदेशों में भी लोगों ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया जो केवल एक संगीतकार नहीं बल्कि उससे कहीं बढ़कर था। ज़ुबीन एक गायक, अभिनेता, संगीतकार, निर्देशक और सबसे बढ़कर एक सांस्कृतिक प्रतीक थे। उनका अचानक निधन, तीन दशक से भी लम्बी एक बहुरंगी यात्रा का अंत है।

मेघालय के तुरा में 18 नवम्बर, 1972 को जन्मे ज़ुबीन गर्ग को संगीत अपने परिवार से विरासत में मिला था। उन्होंने अपनी माँ से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली। बहुमुखी प्रतिभा के धनी ज़ुबीन ने कई वाद्ययंत्रों में महारत हासिल की और लोक परम्पराएँ आत्मसात कीं। 1992 में आए उनके प्रारम्भिक एल्बम 'अनामिका' ने असमिया संगीत को नई दिशा दी जिसमें लोक और आधुनिक संगीत का तालमेल था। इसने तुरंत युवाओं का ध्यान आकृष्ट किया। उनकी आवाज़ ने भाषाई सीमाएँ तोड़ीं और उन्होंने असमिया, हिन्दी, बांग्ला, बोडो, मिसिंग, कारबी, गरो, डिमासा, नेपाली, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम सहित 40 भाषाओं में 38,000 से अधिक गीत गाए। उनके असमिया गीतों में बीहू गीत से लेकर टोकरी गीत, बोरगीत और रोमांटिक गीत तक शामिल थे और हर गीत में उनकी शैली अनोखी होती थी।

ज़ुबीन गर्ग अपने आप में एक संस्था थे। उन्होंने फिल्में निर्देशित कीं, गीत लिखे, संगीत रचा और लोकप्रिय असमिया फिल्मों जैसे 'दीनबन्धु', 'मोन जाइ', 'मिशन चाइना', 'कंचनजंघा' और 'डॉक्टर बेज़बरुआ 2' में अभिनय किया। उनकी हिन्दी फिल्मों जैसे 'दिल से' और 'गैंगस्टर' के गानों ने उन्हें पूरे भारत में लोकप्रिय बनाया जबकि 'या अली' ने उन्हें राष्ट्रीय ख्याति और पुरस्कार दिलाए। 2007 में उन्हें 'इकोज़ ऑफ़ साइलेंस' के लिए सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशक का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

असम के लिए तो ज़ुबीन गर्ग राज्य की धड़कन थे। उनके गीतों में प्रेम और विरह, ग्राम्य जीवन की सुंदरता, लोगों की पीड़ा और उज्ज्वल भविष्य की आशा छलकती थी। उनके रोमांटिक गीतों ने युवाओं को अपनी भावनाएँ व्यक्त करने की भाषा दी। हमारे नायकों का जश्न मनाते उनके गाथा गीत हमें गर्व से रोमांचित करते थे। अपनी माँ और बहन के गुज़रने पर उनके लिखे व्यक्तिगत शोक गीत सुनकर हर दिल पसीजा था।

यदि कोई एक गीत असम की शाश्वत आत्मा को व्यक्त करता है तो वो है 'मायाबिनी रातिर बुकुत' (जादुई रात की गोद में)। ज़ुबीन के लिए यह आशा, क्षणभंगुर जीवन, प्रेम और विरह का प्रतीक था। उनके निधन के बाद असम के लोगों के लिए यह उनका स्मृति-गीत बन गया है। यह गीत जिस तरह से एक सामूहिक प्रार्थना में बदला, वो इस बात का साक्षी है कि ज़ुबीन वास्तव में असम की आवाज़ थे।

युवा पीढ़ी के लिए ज़ुबीन गर्ग का जीवन साहस की मिसाल था। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि अपने राज्य में पहचान बना कर रहने वाला व्यक्ति भी राष्ट्रीय ख्याति हासिल कर सकता है। उन्होंने लोक परम्पराओं में नवजीवन का संचार किया, बीहू प्रस्तुतियों को नया रूप दिया और फ़िल्म मिशन चाइना से असमिया सिनेमा को नई ऊर्जा दी। उनका मुम्बई का आवास, असम के युवा कलाकारों के लिए खुला रहा, उन्हें वहाँ आश्रय ही नहीं मार्गदर्शन भी मिला। आज के कई स्थापित संगीतकारों के लिए ज़ुबीन गर्ग वो व्यक्ति थे जिसने उन्हें सपने देखने का साहस दिया।

ज़ुबीन गर्ग की विरासत सामाजिक प्रतिबद्धता में भी है। कलागुरु आर्टिस्ट फाउंडेशन के माध्यम से उन्होंने संघर्षशील कलाकारों और शिल्पकारों की

मदद की, फ़ुटबॉल मैच आयोजित करके युवाओं को खेलों के लिए प्रोत्साहित किया और गैंडों के संरक्षण तथा पर्यावरण के लिए भी आवाज़ उठाई। वे केवल गायक नहीं थे, ज़रूरत के वक्त वे लोगों के साथ खड़े रहे।

प्रधानमंत्री का 'मन की बात' कार्यक्रम में ज़ुबीन गर्ग का उल्लेख करना, असम और ज़ुबीन के संगीत प्रेमियों के दिल को छू गया। यह श्रद्धांजलि एक व्यक्ति को नहीं बल्कि असमिया पहचान का सम्मान है। ज़ुबीन ने असम की आवाज़ को भारत के हर कोने तक पहुँचाया। उन्होंने सिद्ध कर दिखाया कि कला लोगों को जोड़ती है, प्रेरित करती है और दिल को सुकून देती है। उनका निधन एक अपूरणीय क्षति है, लेकिन उनका संगीत उन्हें अमर रखेगा।

अब यह हमारा विशेषकर युवाओं का कर्तव्य है कि हम ज़ुबीन गर्ग की विरासत को आगे बढ़ाएँ—जो हमें रचनात्मक बने रहने, साहसपूर्वक सपने देखने, समाज सेवा में करुणा दिखाने और अपनी भाषा व परम्पराओं पर गर्व करने को प्रेरित करती है। अगर हम ऐसा करते हैं तो ज़ुबीन की यात्रा अनवरत जारी रहेगी। असम, ज़ुबीन गर्ग को अलविदा कहता है लेकिन उनका संगीत हमारे दिलो-दिमाग़ में सदा गूँजता रहेगा, पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा और हमेशा याद दिलाता रहेगा कि कला में वो शक्ति है जो हम सब को एक करती है।

इज़ाबेल ऐना
निदेशक
सेंटर मंडप, पेरिस

सीमाओं से परे एक विरासत की परीकथा

पेरिस में मंडप की स्थापना मेरे स्वर्गीय माता-पिता मिलेना साल्विनी (2019 में पद्मश्री से सम्मानित) और रॉजर फिलिपुज़ी ने 1975 में की थी। उस समय मेरी माँ अपने भारतीय नृत्य की कक्षाओं के लिए एक स्टूडियो की तलाश में थीं। भारत-प्रेम और प्रदर्शन कलाओं के प्रति दोनों के गहरे अनुराग से मंडप का जन्म हुआ और यहीं से उनके अन्य कार्यों का विस्तार हुआ।

मंडप

यह जगह मिलने पर मेरे उद्यमी और बिल्डर पिता ने पहले ही भाँप लिया कि प्रदर्शन कलाओं के लिए यह जगह बहुत उपयुक्त रहेगी। उन्होंने इसकी वास्तुकला की कल्पना करके तुरंत नवीनीकरण का काम शुरू कर दिया। दोनों ने मिलकर इसका नाम रखा 'मंडप' और उसी वर्ष शरद काल में यहाँ पहला कार्यक्रम हुआ। यह इसका दूसरा जन्म था!

1980 में 4 वर्षीय इज़ाबेल मंडप के प्रवेश द्वार पर भरतनाट्यम के अडावु (नृत्य का प्रारम्भिक चरण) का अभ्यास करती हुई।

बहुत छोटी उम्र से मैंने स्वाभाविक रूप से भारतीय नृत्य अपना लिया क्योंकि बच्चे अपने परिवेश को ही आत्मसात करते हैं। भारत की गुरु-शिष्य परम्परा तो अदृश्य सीमाएँ पहले ही पार कर चुकी थी। मेरी माँ में, किसी व्यक्ति के भीतर छिपी कला को पहचानने और कलाकारों का मार्गदर्शन करने की अद्भुत दृष्टि थी। अपने संकल्प और उत्साही स्वभाव से वे मुझे उसी ईमानदारी और सूझबूझ से बतातीं और सलाह देतीं जिस तरह वे अपने अन्य शिष्यों को बताती और सिखाती थीं।

नाबनिता चौधरी, 2025

यद्यपि इसके नाम में एक गहरी भारतीय पहचान है (इसमें संगीत कार्यक्रम, नृत्य प्रस्तुतियाँ और भारतीय नृत्य का विद्यालय शामिल था) पर इसके केन्द्र में वे सभी समृद्ध परम्पराएँ भी थीं जो भारतीय विरासत से जुड़ती और संवाद करती थीं।

इस प्रकार मंडप एक ऐसा जीवंत केंद्र बना जो संस्कृति की सीमाओं के पार प्रदर्शन कलाओं और वैश्विक संवाद को समर्पित था।

कथक के विद्यार्थियों का वार्षिक समारोह, 2025

लगभग पैंतीस वर्ष तक मेरे माता-पिता ने मिलकर मंडप की मधुर लय रची। उनकी अथक कार्यनिष्ठा से केन्द्र की प्रतिष्ठा सुदृढ़ हुई और हर वर्ष 200 से 250 कार्यक्रमों के आयोजनों ने कलात्मक आदान-प्रदान का निरंतर प्रवाह बनाए रखा।

समय-समय पर बड़े कार्यक्रम मंडप परिसर के बाहर भी आयोजित किए गए ताकि यह कहीं अधिक दर्शकों तक पहुँच सके।

1985 में आयोजित '24 आवर्स ऑफ़ राग' संगीत समारोह, इसका उत्कृष्ट उदाहरण है जिसमें हिन्दुस्तानी संगीत के जाने-माने उस्तादों की एक स्वर्णिम पीढ़ी एकत्र हुई थी।

24 घंटे का यह असाधारण अखंड संगीत चक्र वास्तविक समय के अनुरूप रागों पर आधारित था। प्रत्येक क्षण के लिए उपयुक्त राग और प्रत्येक राग उसी शैली में निपुण कलाकार ने प्रस्तुत किया जिससे यह एक अद्वितीय और अप्रतिम संगीत प्रस्तुति बन गई।

मुझे याद हैं वे कथककली और कुटियाट्टम के रात्रिकालीन कार्यक्रम

जो मेरे माता-पिता ने आयोजित किए थे। परम्परा के अनुसार ये दीर्घकालिक कार्यक्रम दर्शकों को सुबह होने तक महाकाव्यों में मगन रखते और कलाकारों को उन कला रूपों की माँग के अनुसार व्याख्या करने की स्वतंत्रता और गहन अभिव्यक्ति का अवसर देते थे।

1978 में 'राम पट्टाभिषेकम्', पेरिस के निकट थिएटर जेरार्ड फ़िलिप में कथककली रात्रि का भव्य समापन। छायाकारः रॉजर फ़िलिपुजी

अनेक प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियों से घिरी मेरी व्यक्तिगत यात्रा तो असल में, प्रख्यात कलाकार शर्मिला शर्मा द्वारा मंडप में कथक की कक्षाएँ शुरू किए जाने के कुछ वर्ष पश्चात 1998 में शुरू हुई। मेरी जिज्ञासा ने आख़िरकार मुझे भी एक कक्षा आज़माने को प्रेरित किया। चक्कर लेना या घुमरिया, ताल पर पैर चलाना यानी ततकार, और लयबद्ध संचालन जैसी कथक की गरिमा और जटिलता ने मेरा दिल जीत लिया! 2001 में मैंने नई दिल्ली के प्रतिष्ठित कथक केन्द्र में आईसीसीआर छात्रवृत्ति पर प्रवेश लिया और पंडित जयकिशन महाराज के मार्गदर्शन में सीखना शुरू किया। हालांकि सांस्कृतिक आदान-प्रदान की छात्रवृत्ति केवल एक वर्ष के लिए थी लेकिन मैं इस कला में इतना डूब चुकी थी कि नौ साल तक यहीं की होकर रह गई। गुरु जी की हर व्याख्या को आत्मसात करने को उत्सुक मैंने गुरु-शिष्य परम्परा का पालन करते हुए गहन और कठिन अध्ययन में अपने को पूरी तरह समर्पित कर दिया।

खजुराहो नृत्य उत्सव 2010 में इज़ाबेल ऐना का गुरु पं. जयकिशन महाराज के साथ एकल नृत्य

2006 में स्नातक होने के कुछ ही समय बाद मैं आईसीसीआर- कथक के मान्यता प्राप्त एकल कलाकारों की सूची में शामिल हो गई। इस सम्मान ने समर्पण की मेरी भावना को दृढ़ किया और एक बहु-सांस्कृतिक कलाकार के रूप में मेरी पहचान बनी। इस उपलब्धि से मेरे माता-पिता अत्यधिक गौरवान्वित हुए। उनका निःशर्त प्रोत्साहन और हमेशा साथ होने की भावना, भले ही दूर से सही पर मेरे लिए एक आशीर्वाद जैसी थी और इसने मुझे अपनी राह आगे बढ़ाने की अतिरिक्त शक्ति दी।

2010 में पिता के गुज़र जाने के बाद मंडप के कार्यों में माँ की मदद के लिए मैं फ्रांस लौट गई। मैंने उनका काम आगे बढ़ाना जारी रखा। मैंने कथक की पूरी प्रामाणिकता, सम्मान, और उद्देश्यपूर्ण नृत्य-संयोजन पर ध्यान केंद्रित किया ताकि केंद्र की प्रतिष्ठा और दृष्टि बनी रहे।

माँ के निधन के बाद 2022 से यह धरोहर मेरे हाथ में है। प्रदर्शन कलाओं को बढ़ावा और गहरे रचे-बसे समावेशी बहु-सांस्कृतिक मूल्यों वाले मंडप का उद्देश्य आगे बढ़ाना ही मेरा दृढ़ संकल्प है। मंडप का छोटा-सा 100 सीट वाला बैठक जैसा ऑडिटोरियम, कलाकार और दर्शकों के बीच सम्बंध को लेकर अपने स्थापना मूल्यों से कोई समझौता नहीं करता। यहाँ मंच के बिल्कुल निकट कलाकारों का भव्यरूप, भावनाओं और प्रामाणिकता के साथ ताल मिलाता है वो चाहे सांस्कृतिक रूप से स्थानीय हों या दिलों से उस्ताद।

गंडा बंधन की रस्म, गुरु पूर्णिमा, 2025

2025 मंडप का स्वर्ण जयंती वर्ष है। जहाँ हाल में हर वर्ष केवल एक ही संस्कृति का सम्मान किया जाता रहा वहीं इस विशेष पर्व वर्ष में उन 50 संस्कृतियों का उत्सव मनाया जा रहा है जिन्होंने इस केंद्र के इतिहास को आकार दिया। ये पूर्ण सूची तो नहीं है पर फिर भी एक समृद्ध और विविध उदाहरण तो पेश करती है। यह वर्ष मेरे लिए दोहरी विरासत का है क्योंकि इसी दिन गुरु जी ने मेरा भी गंडा बंधन किया था।

अब जब हम अगले 50 वर्ष की यात्रा आरम्भ कर रहे हैं तब मंडप का मिशन और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है: इसे कलात्मक संवाद के अद्वितीय संगम के रूप में मज़बूत करना, सीमाओं के परे कलाकारों और दर्शकों को प्रेरित करना, भावी पीढ़ियों को शिक्षित करना ताकि प्रदर्शन कलाएँ लोगों के बीच भाईचारे की गहन भावनाएँ पैदा कर सकें, और मंडप के संस्थापकों मिलेना और रॉजर की विरासत को उनके स्नेहपूर्ण आशीर्वाद के साथ गर्व से आगे बढ़ा सकें।

'मंडप' के सामने बने 'प्लेस मिलेना साल्विनी चौक' का 2023 में उद्घाटन

संजीव सान्याल
सदस्य, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद

जीएसटी 2 .0

केवल मूल्य ही नहीं घटे, दक्षता लाभ के द्वार भी खुले

जुलाई 2017 में जीएसटी शुरु करने का उद्देश्य करों को एक प्रणाली में लाना था। इसने केन्द्रीय और राज्य स्तर पर लागू अनेक करों जैसे उत्पाद शुल्क, सेवा कर, मूल्य संवर्द्धित कर (VAT), अतिरिक्त उपकर (सरचार्ज) और शुल्क (CESSES) आदि की जटिल व्यवस्था की जगह ली थी। इसका उद्देश्य करों का दोहराव कम करना, अनुपालना सरल बनाना और पारदर्शिता में सुधार लाना था।

इस लेख में हम चर्चा करेंगे कि सितम्बर 2025 में टैक्स स्लैब्स के तर्कसंगत पुनर्गठन, वस्तुओं का उचित श्रेणियों में पुनर्वर्गीकरण और प्रक्रियागत सुधारों के बाद शुरू हुए जीएसटी 2.0 से मूल्यों पर पड़ने वाले तुरन्त प्रभाव और माँग बढ़ने के अलावा, स्थायी दक्षता के लाभ कैसे मिलेंगे।

आइए देखें कि जीएसटी 2.0 से किन मुद्दों को सुधारने का प्रयास किया गया है।

जीएसटी के पहले चरण में नई अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था में परिवर्तन के दौरान, व्यवधान कम-से-कम करने और दर निर्धारण के माध्यम से राजस्व की स्थिरता बनाए रखने पर ध्यान केन्द्रित रहा ताकि कर दरें पहले से मौजूद स्तर के अनुरुप बनी रहें। करों की दर संरचना की चार मुख्य श्रेणियाँ (5%, 12%, 18% और 28%) थीं। साथ ही, कुछ विशेष दरें और छूट भी थीं। चूँकि उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर नई प्रणाली में आसान परिवर्तन सुनिश्चित करना था इसलिए इसे मूल सिद्धांतों जैसे संसाधनों का कुशल आवंटन और प्रक्रियागत दक्षता प्राप्त करने की दृष्टि से तैयार नहीं किया गया था। उत्पादों को उनके आर्थिक गुणों के बजाय पहले से प्रभावी जीएसटी कर दरों के आधार पर स्लैब्स में वर्गीकृत किया गया। परिणाम यह हुआ कि एक असंगत कर ढांचा बना जैसे नमकीन या सादा पॉपकॉर्न पर 5% कर लगाया गया जबकि कैरेमल या फ्लेवर्ड पॉपकॉर्न को 18% कर स्लैब में रखा गया।

इस प्रणाली को अधिक सुव्यवस्थित करने के लिए पिछले आठ वर्ष के दौरान निरंतर सुधार होते रहे लेकिन एक जैसे उत्पादों पर कर की दर असंगत

होने से वर्गीकरण सम्बन्धी विवाद बढ़ते गए और 2024 तक हर वर्ष 10,000 से अधिक अग्रिम निर्णय (एडवांस रुलिंग) आवेदन दायर हुए।

सितम्बर 2025 में हुए जीएसटी सुधार, देश की अप्रत्यक्ष कर संरचना का पुनर्गठन हैं जो केवल व्यवधानों को कम से कम करने वाली व्यवस्था की जगह अब आर्थिक मूल सिद्धांतों के अनुरुप दक्षता पर केन्द्रित ढांचे में बदली गई है। जीएसटी प्रणाली एक बार स्थिर हो जाने के बाद इसे सरल संरचना में बदलने की योजना तो शुरू से ही थी लेकिन कोविड-19 और उसके उपरान्त आर्थिक बहाली के प्रयासों के कारण इसे लागू नहीं किया जा सका। नई रुपरेखा लागू करने से पहले प्रणाली में स्थिरता लाना जरूरी था। अब यह नया ढांचा निम्नलिखित तरीकों से लागू किया गया है।

पहला सुधार यह है कि जीएसटी स्लैब संरचना को चार दरों वाले ढांचे से घटा कर दो तरह की दर प्रणाली में बदला गया है। जन-हितैषी वस्तुओं (मैरिट गुड्स) पर 5% की दर और सामान्य वस्तुओं

पर 18% की दर लागू की गई है। इसके अलावा, विलासिता और अहितकर वस्तु श्रेणी की कुछ चुनी हुई वस्तुओं पर 40% की विशेष दर रखी गई है। ऐसा करने से उन जटिलताओं में उल्लेखनीय कमी आई है जो जीएसटी प्रणाली शुरू होने के समय से ही मौजूद थीं। अब 5% जन-हितैषी दर के अन्तर्गत 516 वस्तुएँ और 18% मानक दर के अन्तर्गत 640 वस्तुएँ हैं जिससे कर ढांचा प्रणाली उल्लेखनीय रुप से सरल हुई है। प्रणाली में कम

घटक होने से यह सरलीकृत व्यवस्था भ्रम की स्थिति समाप्त करती है और अनुचित लाभ के अवसर भी सीमित करती है।

दूसरा सुधार इस बात पर केन्द्रित है कि वस्तुओं को उनके आर्थिक सिद्धांतों और प्रकृति के आधार पर उपयुक्त कर स्लैब में तार्किक रूप से वर्गीकृत किया जाए न कि पुराने ढांचे से विरासत में मिली दरें बनाए रखी जाएँ। जन-हितैषी वस्तुएँ (मैरिट गुड्स) – जो बुनियादी खपत की जरूरतें पूरी करती हैं या जिनका समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है – उन्हें निम्न दर (5%) के अन्तर्गत रखा गया है। वहीं सामान्य उपभोग की वस्तुएँ (स्टैंडर्ड गुड्स) जिनका नियमित उपयोग होता है, उन पर मध्यम दर (18%) लागू की गई है। पॉपकॉर्न जैसे उत्पाद जो पहले फ्लेवर के आधार पर अलग-अलग श्रेणी में थे उन्हें नमकीन की श्रेणी में 5% रखा गया है जबकि 40% स्लैब केवल सीमित संख्या में विलासिता और अहितकर वस्तुओं के लिए ही है।

इससे उत्पाद वर्गीकरण में तार्किक सुसंगति आई है, और अत्यधिक सूक्ष्म भेद से उत्पन्न भ्रम और विसंगतियाँ दूर की गई हैं जिससे कर संरचना की अक्षमताएँ भी दूर की जा सकती हैं।

ऐसा होने से करदाताओं और प्रशासकों दोनों के लिए स्पष्टता बढ़ेगी और ऐतिहासिक रूप से विवाद और अनिश्चितता का प्रमुख स्रोत रहे वर्गीकरण सम्बन्धी विवाद कम होंगे।

तीसरा, सुधारों ने उल्टी कर संरचना (इन्वर्टिड ड्यूटी स्ट्रक्चर) की समस्या हल की है जिसमें व्यवसायियों को कच्चे माल यानी इन्पुट्स पर अन्तिम उत्पाद की तुलना में अधिक कर देना पड़ता था जिससे उद्यमियों की कार्यशील पूंजी पर लागत बढ़ जाती थी। वस्त्र उद्योग में, कृत्रिम रेशे और धागे का कर क्रमशः

18% और 12% से घटाकर 5% किया गया है जिससे इनपुट-आउटपुट दरें सन्तुलित हुई हैं। कृषि क्षेत्र में भी इसी तरह के सुधार (जैसे बायो-पैस्टीसाइड्स पर 5% कर) होने से घरेलू मूल्य संवर्धन को बढ़ावा मिलता है, आयात पर निर्भरता कम होती है और व्यापार की शर्तें भी बेहतर हो जाती हैं।

चौथा, एक विशेष अर्ध-न्यायिक संस्था जीएसटी अपीलीय अधिकरण बनाने से, करदाताओं के लिए विवाद निपटान का समय और लागत कम होगी और पहले से ही बोझ तले दबी न्यायपालिका का भार कम होगा। जीएसटी अपीलीय अधिकरण, जिसमें केंद्र और राज्य प्रशासन से न्यायिक और तकनीकी सदस्य शामिल हैं, विभिन्न क्षेत्रों में कर प्रावधानों की निरन्तर व्याख्या सुनिश्चित करता है। यह 'एक राष्ट्र, एक मंच' दृष्टिकोण ऐसी क्षेत्रीय विसंगतियाँ समाप्त करता है जिनसे एक जैसे मुद्दों पर विरोधाभासी निर्णय की स्थिति पैदा होती थी।

पाँचवाँ, इन प्रक्रिया सुधारों से दक्षता में और वृद्धि होगी। कम जोखिम वाले आवेदकों के लिए जीएसटी पंजीकरण सरल किया गया है, अब 3 दिन में मंजूरी मिल जाती है (जो 96% आवेदकों को कवर करता है) जबकि पहले यह 7-30 दिन लेता था, और यह सब आधार सत्यापन से होता है। साथ ही, कर अधिकारियों के लिए रिफंड प्रक्रिया की कड़ी समय सीमा भी लागू की गई है। इसे एआई संचालित ऑडिट से जोड़ा गया है, जो इनपुट टैक्स क्रैडिट का प्रवाह बेहतर करते हैं और पूंजी की लागत कम करते हैं। सरल प्रक्रियाओं का प्रौद्योगिकी

से एकीकरण, दक्षता में और वृद्धि करता है। व्यवसायियों को अनुपालन लागत कम होने का लाभ मिलता है जबकि कर अधिकारियों की निगरानी क्षमता बेहतर होती है और प्रशासनिक ख़र्च में कमी आती है।

जीएसटी 2.0 से हुई दक्षता में वृद्धि से केवल अस्थायी उपभोग को प्रोत्साहन नहीं मिलेगा अपितु देश की उत्पादक क्षमता में भी स्थायी सुधार होगा। मूल्यों में कमी आने से उपभोक्ताओं को जहाँ तत्काल राहत मिलती है, वहीं कर प्रणाली में संरचनात्मक अक्षमताएँ समाप्त करने से अनेक लाभ मिलते हैं। टैक्स स्लैब के एकीकरण, वर्गीकरण में विसंगतियों के उन्मूलन और विवाद निपटान तंत्र के सुदृढ़ीकरण ने मिलकर एक ऐसी प्रणाली बनाई है जो बाधा बनने के बजाय आर्थिक और प्रशासनिक दक्षता बढ़ाती है।

संजीव सान्याल प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य हैं। यह उनके निजी विचार हैं।

एस . एल . भैरप्पा

जीवन और विरासत

कर्नाटक के हासन जिले के एक शांत गाँव में 20 अगस्त 1931 को एक बालक ने जन्म लिया जिसका नाम रखा गया- सन्तेशिवरा लिंगन्नैया भैरप्पा। उस समय कोई नहीं जानता था कि यह बालक भविष्य में भारत के सबसे गहन विचारकों और लोकप्रिय लेखकों में से एक होगा। उनका जीवन संघर्ष, साहस और सत्य की निरंतर खोज में रहा। उन्होंने ऐसी कहानियाँ लिखीं जो जीवन, समाज और मानव आत्मा से जुड़े प्रश्नों की पड़ताल करती थीं। समय के साथ वे भारत की सांस्कृतिक और नैतिक चेतना की पीड़ा और शक्ति की आवाज़ बन गए।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुए उन्हें एक ऐसा महान व्यक्तित्व बताया जिन्होंने राष्ट्र के अंतःकरण को झकझोरा और भारत की आत्मा का स्पर्श किया।

प्रारम्भिक जीवन

भैरप्पा का बचपन संघर्षपूर्ण था। उनका जन्म एक निर्धन परिवार में हुआ और बहुत कम उम्र में ही प्लेग के कारण अपनी माँ और भाई दोनों को खो दिया। पिता यह

गहरा आघात सहन न कर पाने के कारण परिवार की देखभाल नहीं कर सके। नन्हा बालक अपने जीवन का रास्ता स्वयं खोजने को मजबूर था। उन्होंने छोटे-मोटे काम किए, घुमन्तू साधुओं के संग जगह-जगह घूमे और जीने के लिए रेलवे स्टेशनों पर रातें काटीं।

इन कठिनाइयों ने उनकी सोच गढ़ी और जीवन की वास्तविकताओं की गहरी समझ दी। आगे चलकर उनकी कई रचनाएँ इन्हीं अनुभवों - परिजनों को खोने, जीवन के संघर्ष और आत्म-खोज की यात्राओं से प्रेरित हुईं।

शिक्षा और अध्यापन

भैरप्पा की शिक्षा कठिन परिस्थितियों में पूरी हुई। अनेक बाधाओं के बावजूद उन्होंने दृढ़ संकल्प और आत्मबल के सहारे पढ़ाई जारी रखी। मैसूर

डॉ सन्तेशिवरा लिंगन्नैया भैरप्पा

(जन्म: 20 अगस्त 1931, हासन, कर्नाटक
मृत्यु: 24 सितम्बर 2025, बेंगलुरु; आयु 94 वर्ष)

विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में स्वर्ण पदक के साथ स्नातकोत्तर की डिग्री ली। बाद में *सत्य एवं सौन्दर्य* विषय पर उन्होंने पीएच.डी. की उपाधि हासिल की।

उन्होंने कर्नाटक के विभिन्न महाविद्यालयों में दर्शनशास्त्र का अध्यापन किया और बाद में दिल्ली स्थित राष्ट्रीय शिक्षा अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद में कार्य किया। अध्यापन उनके लिए केवल नौकरी नहीं बल्कि अपने विचारों की निरंतर खोज का एक मार्ग था। उनके विद्यार्थी उन्हें एक संयमशील और अनुशासित शिक्षक के रूप में याद करते हैं जो उन्हें गहन चिंतन के लिए प्रेरित करते थे।

गहरी सोच और सत्यनिष्ठा के लेखक

भैरप्पा ने उपन्यास लिखने शुरू किए जिनमें उनका दार्शनिक चिंतन

प्रतिबिम्बित होता है। वे अत्यंत सावधानी से लेखन करते थे। अपनी पुस्तक पूरी करने से पहले वे वर्षों तक शोध में लगे रहते। उनके उपन्यास अपने स्पष्ट कथा-विन्यास और गहन विचारों के लिए जाने जाते हैं। उनकी सर्वाधिक चर्चित कृतियों में से एक है–*पर्व*, जिसमें उन्होंने *महाभारत* की एक यथार्थवादी दृष्टिकोण से पुनः कल्पना की है। इसमें उनके पात्र देवत्व से परे, सामान्य मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं जो नैतिक द्वन्द्वों और कठिन निर्णयों से जूझते हैं। उनका उपन्यास *आवरण* ऐतिहासिक मान्यताओं पर प्रश्न उठाता है और पाठकों को संस्कृति, आस्था और पहचान के गहरे पहलुओं पर विचार करने के लिए आमंत्रित करता है। इसी तरह *मंद्र*, *तंतु* और *सार्थ* जैसे अन्य प्रसिद्ध उपन्यास संगीत, समाज और आध्यात्मिकता जैसे विषयों की गहन पड़ताल करते हैं।

उन्होंने कभी भी साहित्यिक प्रवृत्तियों का अनुसरण करने या किसी आंदोलन में शामिल होने का प्रयास नहीं किया। इसके विपरीत वे अपने विश्वास और अनुभवों को पूरी सत्यनिष्ठा से लिखने पर एकाग्र रहे। उनकी कहानियाँ मनुष्य के भीतरी संघर्षों और उन मूल्यों को लेकर बुनी गईं जो उन्हें राह दिखाते हैं। पाठक उनकी पुस्तकों से जुड़ सके क्योंकि इनमें वही सच्ची भावनाएँ, प्रश्न और संघर्ष थे जिनसे उनका हर दिन सामना होता है।

पुरस्कार और पहचान

भैरप्पा को उनके लम्बे साहित्यिक जीवन में उत्कृष्ट योगदान के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2010 का सरस्वती सम्मान और बाद में पद्मश्री और पद्मभूषण से भी अलंकृत किया गया। उनके उपन्यासों का अनेक भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ और देश भर में लोगों ने उन्हें पढ़ा। हालांकि उन्होंने मुख्य रूप से कन्नड़ भाषा में लिखा किंतु उनके विचार देश भर के पाठकों तक पहुँचे।

विरासत और प्रभाव

भैरप्पा का जीवन दर्शाता है कि ज्ञान और चिंतन, पीड़ा से भी पैदा हो सकता है। उनकी जीवन यात्रा बताती है कि राह कितनी भी कठिन हो, सत्यनिष्ठा के साथ एक उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना सम्भव

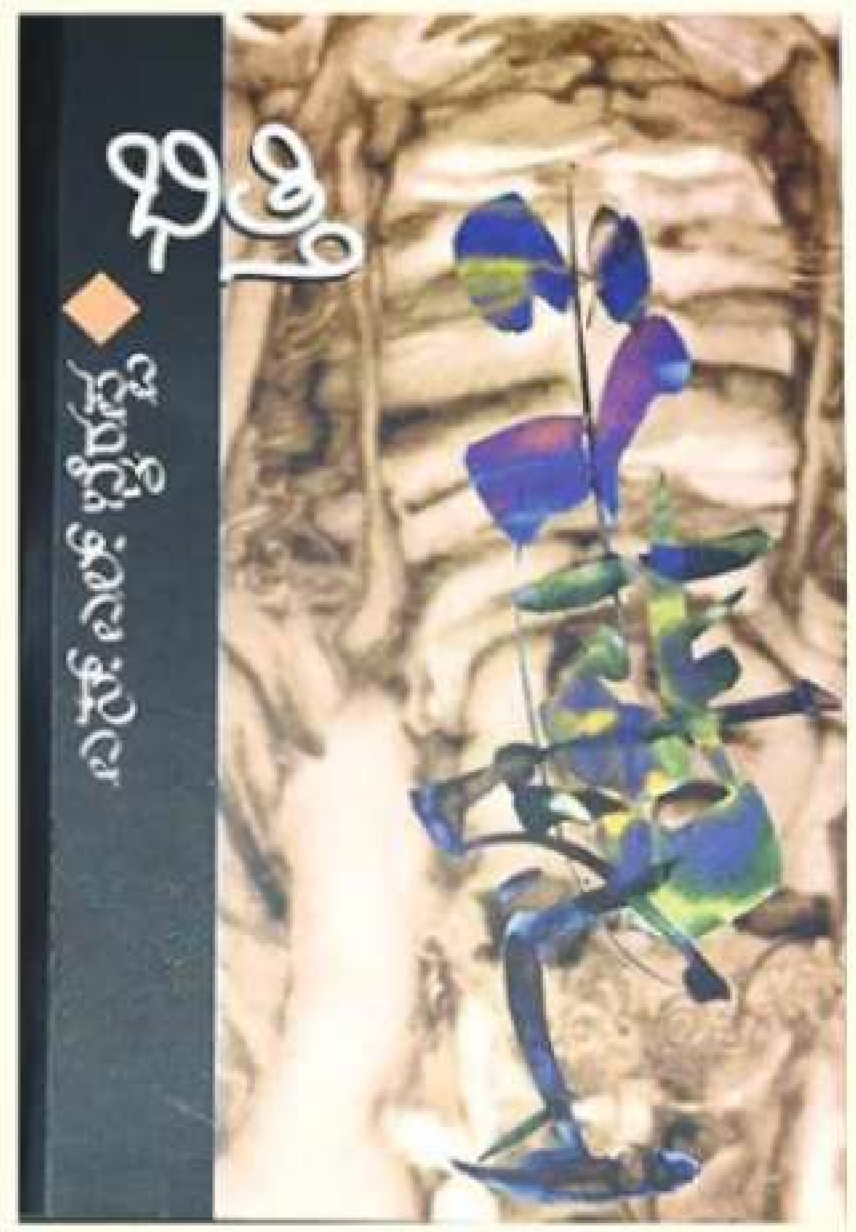

है। अनेक लोगों के लिए उनके उपन्यास एक दर्पण और मार्गदर्शक दोनों का काम करते हैं। वे पाठक को ठिठक कर अपने जीवन मूल्यों और आस्थाओं पर विचार करने को विवश करते हैं।

सितम्बर 2025 में भैरप्पा के निधन से भारत ने एक महान चिंतक और कथाकार खो दिया है लेकिन उनके शब्द अमर हैं। उनकी लिखी पुस्तकें कक्षाओं, पुस्तकालयों और उन पाठकों के हृदय में सदा बनी रहेंगी जिन्हें उनके लेखन में सुख और स्पष्टता की अनुभूति होती है।

भैरप्पा का जीवन इस बात का उदाहरण है कि आत्मबल, अनुशासन और सोच, जीवन की मुश्किलों को समझदारी में बदल सकते हैं। उन्होंने दिखा दिया कि साहित्य केवल मनोरंजन नहीं बल्कि जीवन को समझना और इसकी सच्चाई को तलाशना भी है।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

कार्रवाई के लिए आह्वान

126वाँ संस्करण

मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि 2 अक्तूबर को कोई-न-कोई खादी उत्पाद जरूर खरीदें। गर्व से कहिए, ये स्वदेशी हैं। #Vocalforlocal के साथ इसे सोशल मीडिया पर शेयर करें।

जब आप रामलला के दर्शन के लिए अयोध्या आएँ, तो मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप महर्षि वाल्मीकि और निषादराज मंदिर भी अवश्य जाएँ।

मैं एस.एल. भैरप्पा जी को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और युवाओं से आग्रह करता हूँ कि वे उनकी रचनाएँ पढ़ें।

यदि हम इस त्यौहार को केवल स्वदेशी उत्पादों के साथ मनाने का निर्णय लें, तो आप देखेंगे कि हमारे उत्सव का आनंद कई गुना बढ़ जाएगा।

त्यौहारों के दौरान,... सफाई हर जगह हमारी ज़िम्मेदारी बननी चाहिए - गलियों में, मोहल्लों में, बाजारों में, गाँवों में।

Amit Shah
#MannKiBaat
छठ महापर्व को
UNESCO की सूची
में शामिल कराने
में जुटी है
मोदी सरकार

Dilip Saikia
Listening to Hon'ble PM Shri @narendramodi ji's 126th Mann Ki Baat from Booth 175, State BJP Office, Rajdhani Mandal, Guwahati.
HPM fondly remembered Assam's pride, Zubeen Garg: "Zubeen was the kohinoor of Assamese culture, gone physically but forever in our hearts."

Dr.L.Murugan
In his 126th Mann Ki Baat episode, Hon'ble Prime Minister Shri. @narendramodi ji praised the remarkable achievement of Lieutenant Commander Dilna K (Kerala) and Lieutenant Commander Roopa Alagirisamy (Tamil Nadu), who successfully circumnavigated the globe aboard the Indian Naval sailing vessel Tarini. The duo completed their journey, covering approximately 50,000 kilometers in nearly 250 days, showcasing exceptional determination and sailing skills. Notably, their expedition was part of the Navika Sagar Parikrama II mission, which aims to promote women's empowerment, maritime cooperation, and India's maritime heritage. The Prime Minister highlighted their courage and perseverance in overcoming challenges, drawing parallels with the celebration of Navratri, which honors women as goddesses.
#MannKiBaat

Rushikesh Patel
#MannKiBaat
छठ पूजा
भारत का
गर्व

Dr. S. Jaishankar
In #MannKiBaat, PM @narendramodi highlights the efforts of Centre Mandapa, Paris in popularising Indian dance and culture abroad for 50 years.
He also underlined India's efforts to get Chhath Puja festival included in UNESCO Intangible Cultural Heritage list.
Do listen
#MannKiBaat
इस centre ने भारतीय नृत्य को लोकप्रिय बनाने में अपना व्यापक योगदान दिया है।
छठ महापर्व को UNESCO की Intangible Cultural Heritage List

Gajendra Singh Shekhawat
#MannKiBaat

Hardeep Singh Puri
#MannKiBaat

Shivraj Singh Chouhan
#MannKiBaat

K.Annamalai
Heartfelt gratitude to our Hon PM Thiru @narendramodi avl for recognizing Thiru Ashok Jagadeesan avl and Thiru Prem Selvaraj avl of Yaazh Naturals, Tamil Nadu in the 126th episode of #MannKiBaat. His acknowledgment of their remarkable journey from corporate careers to sustainable entrepreneurship is truly inspiring.
With their sustainable approach, they produce 100% natural, biodegradable yoga mats and wellness products that are completely free from harmful chemicals and have provided meaningful employment to over 200 families while promoting our rich cultural heritage of natural craftsmanship.

Manjinder Singh Sirsa
#MannKiBaat
देश की आत्मनिर्भरता
का रास्ता
स्वदेशी
से होकर जाता है...

Nayab Saini
#MannKiBaat
मन की बात

Samrat Choudhary
#MannKiBaat

Pradeep Bhandari(प्रदीप भंडारी)
In the 126th episode of Mann Ki Baat, Prime Minister Narendra Modi Ji (@narendramodi) remembered Lata Mangeshkar on her birth anniversary.
He recalled his personal bond with Lata Didi, mentioning how she tied him a Rakhi every year and how he especially liked her song 'Jyoti Kalash Chhalke' composed by Sudhir Phadke ji."
#MannKiBaat

Rahul Jha
"Friends, among the great personalities who inspired Lata Didi, one was Veer Savarkar, whom she called Tatya. She also lent her voice to many of Veer Savarkar ji's songs."
- PM Shri @narendramodi.
#MannKiBaat
लता दीदी जिन महान
विभूतियों से प्रेरित थीं उनमें
वीर सावरकर भी एक हैं,
जिन्हें वो तात्या कहती थीं।
उन्होंने वीर सावरकर जी के कई
गीतों को भी अपने सुरों में पिरोया।

Rekha Gupta
#MannKiBaat

नारी शक्ति को सलाम...8 माह समुद्री यात्रा करने वालीं नौसेना अधिकारियों को सराहा

प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम के दौरान भारतीय नौसेना की दो जांबाज अधिकारियों लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना और लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा के साथ फोन पर बातचीत भी की। पीएम मोदी ने उनके साहस को सलाम करते हुए कहा, क्या आप समंदर में लगातार 8 महीने रह सकते हैं? क्या आप समंदर में पतवार वाली नाव यानि हवा के वेग से आगे बढ़ने वाली नाव से 50 हजार किलोमीटर की यात्रा कर सकते हैं, वो भी तब जब, समंदर में मौसम कभी भी बिगड़ जाता है। लेकिन भारतीय नौसेना की दो बहादुर अधिकारियों ने नाविका सागर परिक्रमा के दौरान ऐसा कर दिखाया। प्रधानमंत्री ने फोन लाइन पर दोनों अधिकारियों से उनके अनुभव के बारे में पूछा। इस लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना ने बताया, हमें एक बार ही ऐसा मिलता है जो हमारी जिंदगी बदल देती है। भारतीय नौसेना और सरकार ने हमें इस अभियान के जरिये ऐसा ही मौका दिया।

खाना बनाने से नाव ठीक करने तक हर भूमिका निभाई : लेफ्टिनेंट कमांडर रूपा ने बताया कि उन्होंने खाने-पीना बनाने, सफाई करने जैसे कामों से लेकर नाव की रिपेयरिंग, इंजन मैकेनिक, डाइवर, हर भूमिका निभाई। इस दौरान आई चुनौतियों के बारे में पूछे जाने पर बताया कि उनकी सिर्फ 17 मीटर लंबी और पांच मीटर चौड़ी नाव ने तीन भीषण तूफानों का सामना किया। सफर के दौरान उन्होंने तीन मंजिली इमारत जितनी लहरें झेलीं।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਵੱਲੋਂ 'ਮਨ ਕੀ ਬਾਤ' ਦੇ 126ਵੇਂ ਐਪੀਸੋਡ ਨੂੰ ਸੰਬੋਧਨ

ਮੋਦੀ ਵੱਲੋਂ ਦੇਸ਼ ਵਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਸਵਦੇਸ਼ੀ ਉਤਪਾਦ ਅਪਣਾਉਣ ਦੀ ਅਪੀਲ

मन की बात • सौ साल पूरे होने पर आरएसएस की सेवा और अनुशासन को सराहा

पीएम मोदी ने कहा- 2 अक्टूबर को स्वदेशी जरूर खरीदिए, छठ को यूनेस्को सूची में लाने की तैयारी

भास्कर न्यूज़ | नई दिल्ली

पीएम नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में कई अहम मुद्दों पर बात की। उन्होंने कहा- 2 अक्टूबर को गांधी जयंती है। गांधी जी ने हमेशा स्वदेशी अपनाने पर जोर दिया। दुर्भाग्य से आजादी के बाद खादी की रौनक फीकी होती जा रही थी। मगर बीते 11 साल में खादी के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ा है। मैं सभी से आग्रह करता हूं कि 2 अक्टूबर को कोई न कोई खादी या स्वदेशी सामान जरूर खरीदें। पीएम ने कहा कि सरकार प्रयास कर रही है कि छठ महापर्व को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल किया जाए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष पूरे होने पर मोदी ने इसकी सेवा और अनुशासन की प्रशंसा की। - शेष पेज 10 पर

जुबीन को असमी संस्कृति का कोहिनूर कहा...

1. **जुबीन गर्ग को श्रद्धांजलि:** मोदी ने असम के प्रसिद्ध गायक जुबीन गर्ग की पुण्य स्मृति में उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने उन्हें 'असमी संस्कृति का कोहिनूर' कहा।
2. **लता मंगेशकर पर:** मोदी ने कहा, आज (रविवार) लता दीदी की भी जयंती है। उनके गीतों में वो सबकुछ है, जो मानवीय संवेदनाओं को झकझोरता है। उन्हें श्रद्धांजलि।

சுதேசி மூலமே சுயசார்பை எட்ட முடியும்: பிரதமர் மோடி

'தன்னலமற்ற சேவை–ஒழுக்கம்': ஆர்எஸ்எஸ் அமைப்புக்கு புகழாரம்

PM hails Bihar's culture, and RSS in Mann ki Baat

Modi to release coin, postal stamp to mark the centenary of RSS

पहल 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वदेशी अपनाने पर दिया जोर

दो अक्तूबर को जरूर खरीदें खादी का सामान

दिव्य हिमाचल ब्यूरो – नई दिल्ली

- कहा, भारतीय संस्कृति और त्योहारों की वैश्विक मंच पर पहचान जरूरी
- छठ पर्व यूनेस्को सूची में शामिल करवाने पर कर रहे काम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को 'मन की बात' कार्यक्रम में देशवासियों को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि नवरात्रि के इस समय में हम शक्ति की उपासना करते हैं। हम नारी-शक्ति का उत्सव मनाते हैं। व्यापार से लेकर खेल तक और शिक्षा से लेकर विज्ञान तक आप किसी भी क्षेत्र को लीजिए, देश की बेटियां हर जगह अपना परचम लहरा रहीं हैं। आज वे ऐसी चुनौतियों को भी पार कर रही हैं, जिनकी कल्पना तक मुश्किल है। पीएम मोदी ने कहा कि दो अक्तूबर को गांधी जयंती है। गांधी जी ने हमेशा स्वदेशी को अपनाने पर बल दिया और इनमें खादी सबसे प्रमुख थी। दुर्भाग्य से आजादी के बाद खादी की रौनक कुछ फीकी पड़ती जा रही थी, लेकिन बीते 11 साल में खादी के प्रति देश के लोगों का आकर्षण बहुत बढ़ा है। मैं आप सभी से आग्रह करता हूं कि दो अक्तूबर को कोई न कोई खादी सामान जरूर खरीदें और गर्व से कहें ये स्वदेशी हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' के 126वें एपिसोड में कहा कि भारतीय संस्कृति और त्योहारों को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाना जरूरी है। पीएम मोदी ने उदाहरण देते हुए कहा कि कुछ समय पहले, भारत सरकार के प्रयासों से कोलकाता की दुर्गा पूजा भी यूनेस्को की सूची में शामिल हुई। अगर हम अपने सांस्कृतिक आयोजनों को ऐसे वैश्विक सम्मान दें, तो दुनिया उन्हें जान पाएगी, समझ पाएगी और इसमें भाग लेने के लिए आगे आएगी। प्रधानमंत्री ने देशवासियों से भारतीय संस्कृति और त्योहारों को बढ़ावा देने का आह्वान भी किया। उन्होंने कहा कि भारत सरकार छठ पर्व को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल कराने के लिए काम कर रही है। पीएम मोदी ने कहा कि कुछ ही दिनों में हम विजयदशमी मनाने वाले हैं, इस बार विजयदशमी एक और वजह से बहुत विशेष है। इसी दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। एक शताब्दी की यह यात्रा जितनी अद्भुत है, अभूतपूर्व है, उतनी ही प्रेरक भी है।

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में की नारी शक्ति की प्रशंसा

बिजनेस, स्पोर्ट्स और एजुकेशन से लेकर साइंस में देश की बेटियां लहरा रहीं परचम

स्वदेशी अपनाने पर दिया जोर, लता को दी श्रद्धांजलि

कहा-भारत की संस्कृति को जीवंत रखते हैं त्योहार, दुनिया में महापर्व को मान्यता दिलेगी

छठ को विश्व धरोहर की सूची में शामिल कराएंगे:प्रधानमंत्री

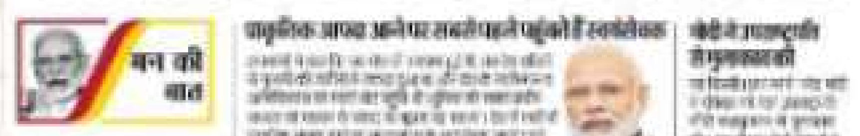

Go 'vocal for local' this festival: PM Modi

Prime Minister Narendra Modi urged the citizens to buy only what is produced in the country.

Prime Minister Narendra Modi on Sunday urged citizens to commit to buying products manufactured in India.

While referring to the discounts across sectors owing to the goods and services tax (GST) rate cuts on the *Mann Ki Baat* broadcast, Modi said: "In the coming days, festivals and joys are coming up, one after another. We do a lot of shopping on every occasion. And this time, a 'GST Bachat Utsav' is also going on. Friends, you can make your festivals even more special by taking a resolve. If we decide to celebrate this festival only with Swadeshi products, you will see the joy of our celebrations rise manifold. Make 'Vocal for Local' your shopping mantra."

Stressing on making the country self-reliant, he said, "Resolve that, you will buy only what is produced in the country. You will take home only what is made by the people of the country. You will use only those goods which bear the toil of a citizen. When we do that, we don't just buy goods; we bring home hope to a family, honour the hard work of an artisan, and give wings to the dreams of a young entrepreneur."

RITURAJ BARUAH

ಗುಣಗಾನ | ಹಲವು ಬಾರಿ ಭೈರಪ್ಪ ಜತೆ ಮಾತಾಡಿದ್ದೇನೆ: ಪಿಎಂ

ಡಾ. ಭೈರಪ್ಪ ಮಹಾನ್ ತತ್ವಜ್ಞಾನಿ: ಮನ್ ಕೀ ಬಾತಲ್ಲಿ ಮೋದಿ ಸ್ಮರಣೆ

ನಮ್ಮ ಸಂಸ್ಕೃತಿ ಬಗ್ಗೆ ಹೆಮ್ಮೆಪಡುವ ಮಹತ್ವ ತಿಳಿಸಿದ್ದ ಸಾಹಿತಿ

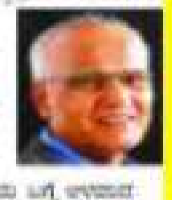

ಬೆಂಗಳೂರಿನ ಕಮಾಂಡರ್ ಜತೆ ಮೋದಿ ಸಂವಾದ

[illegible]

Mann Ki Baat: Modi urges youth to read Bhyrappa's books

The Hindu Bureau
BENGALURU

Prime Minister Narendra Modi in his 126th episode of *Mann Ki Baat* on Sunday, recalled the contribution of Kannada writer S.L. Bhyrappa, who passed away on September 24, and urged the youth to read his books.

In-depth conversations

"A few days ago, our country also lost the great thinker and philosopher Bhyrappa. I had personal contact with Bhyrappa, and we had in-depth conversations on various topics," he said.

Prime Minister Narendra Modi with the late S.L. Bhyrappa.

Further, the Prime Minister said, "Bhyrappa's works will continue to guide the thoughts of the younger generation. Translations of many of his works are also available. He taught us how important it is to be proud of our roots and culture."

Multiple editions

It may be noted that he was one of the best-selling novelists of Kannada, with each of his novels running into multiple editions.

His novels *Parva* (1979), a retelling of the Mahabharat, *Vamshavriksha* (1965) and *Grahabhanga* (1970) are considered to be classics of Kannada literature. He won the Saraswati Samman award for his novel *Mandra* (2001) in 2010. He was awarded the Padma Bhushan in 2023.

मटा अँकर | शतकपूर्तिनिमित्त पंतप्रधान मोदी यांची 'मन की बात'मध्ये स्तुतिसुमने

नि:स्वार्थ सेवाभाव, शिस्त ही संघाची खरी ताकद

'छठ पूजे'च्या युनेस्को नोंदीसाठी प्रयत्न

[illegible]

UNESCO की लिस्ट में लाएंगे छठ महापर्वः मोदी

मन की बात में कहा, त्योहारों में स्वदेशी खरीदें

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के काम को सराहा

[illegible]

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ୧୨୬ତମ ମନ କୀ ବାତ

ପାର୍ବଣରେ ସ୍ୱଦେଶୀ ସାମଗ୍ରୀ କିଣିବାକୁ ଆହ୍ୱାନ

[illegible]

'Vocal for local': PM Modi calls for festive season boost to indigenous products

[illegible]

Spirit of 'nation first' paramount for RSS volunteers, says PM

PM Modi, in his 'Mann Ki Baat', hailed RSS for an 'unprecedented & inspiring' journey

New Delhi: In his 126th edition of his monthly radio talk 'Mann Ki Baat' Sunday, Prime Minister Narendra Modi hailed RSS for an "unprecedented and inspiring" journey. [illegible]

Buy local, make country self-reliant: PM to citizens

In his *Mann Ki Baat* address, Modi urges citizens to purchase locally made goods and khadi items during festival season to strengthen India's economy; he also speaks about 100 years of the RSS

The Hindu Bureau
NEW DELHI

Prime Minister Narendra Modi, in his *Mann Ki Baat* address on Sunday, made a renewed pitch to citizens to buy khadi products and locally made goods during the ongoing festival season to strengthen India's domestic economy and vitalise its entrepreneurs.

"I extend to you good wishes on the upcoming [illegible]

If we decide to celebrate this festival only with Swadeshi products, we don't just buy goods, we bring home hope to a family, honour the hard work of an artisan and give wings to the dreams of a young entrepreneur

NARENDRA MODI
Prime Minister

[illegible] International Space Station." He added that the duo became the first people in the world to reach this point on a sailboat.

Celebrating the RSS

Mr. Modi also spoke about the upcoming 100-year anniversary of the Rashtriya Swayamsevak Sangh.

"This Vijayadashami is special for another reason," he said. "This day marks 100 years of the foundation of the Rashtriya Swayamsevak Sangh. [illegible]

MANN KI BAAT

PM lauds RSS, pushes for 'swadeshi', seeks UNESCO recognition of Chhath Puja

OUR CORRESPONDENT

NEW DELHI: Prime Minister Narendra Modi, in his 126th Mann Ki Baat broadcast on Sunday, lauded the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) for its century-long contribution to nation-building, announced the government's push to secure UNESCO recognition for Chhath Mahaparva, and urged citizens to embrace swadeshi products during the festive season.

Speaking just days before the RSS celebrates its 100th anniversary on Vijayadashami, Modi described the organisation as an embodiment of discipline, sacrifice, and service. A former pracharak himself, he recalled its founding by Keshav Baliram Hedgewar in 1925 with the objective of freeing the country from "intellectual slavery". He said the Sangh's journey over the last hundred years had been "remarkable, unprecedented and inspiring." Paying tribute to Hedgewar's successor, M S Golwalkar, he quoted his words, "This is not mine, this belongs to the nation," and said this philosophy had guided millions of volunteers towards selfless service. "This statement by Guruji Golwalkar has shown millions of volunteers the path of sacrifice and service. This spirit of sacrifice, service, and the discipline it teaches is the true strength of the Sangh. Today, the RSS has been relentlessly and tirelessly engaged in national service for over a hundred years," he said. Modi added that swayamsevaks were often the first to arrive with help whenever natural disasters

KEY POINTS

- He highlighted RSS volunteers' role during natural disasters and their century-long national service
- Announced government efforts to include Chhath Mahaparva in UNESCO's Intangible Cultural Heritage List
- URGED CITIZENS TO BUY KHADI AND SWADESHI PRODUCTS DURING GANDHI JAYANTI AND FESTIVE SEASON, PROMOTING "VOCAL FOR LOCAL"

Continued on P6

Govt striving to get 'Chhath Puja' included in UNESCO's cultural heritage list: PM Modi

[illegible]

PM calls Zubeen 'Kohinoor' in Mann Ki Baat address

Mukut Das | TNN

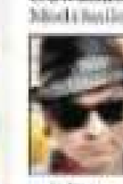

Guwahati: PM Narendra Modi hailed Zubeen Garg as the "Kohinoor of Assamese culture" during his Mann Ki Baat radio address Sunday while grief over the singer's death continued to sweep Assam.

Speaking partly in Assamese, Modi said: "Zubeen Garg asil oxomor xonoruki ratna. Janatar hridayot teo xodai jiyai thakibo," translating it as, "Zubeen was the Kohinoor of Assamese culture. [illegible]

Zubeen's manager Yuva Morcha ex-member

Guwahati: Music icon Zubeen Garg's manager Siddharth Sharma was a member of BJP's Yuva Morcha in Assam, but the party said he holds no position and is not affiliated with it. Sharma is an employee of a Mumbai-based company that manages celebrities, **reports Mukut Das**. He is one of four accused in Garg's sudden death in Singapore on Sept 19.

BJP spokesperson Kishore Upadhyay said Sharma served on the cultural committee of Yuva Morcha, but the panel's term ended last year. "Moreover, by the end of last year, Sharma did not renew his membership during the renewal drive. A person is not considered a member if he or she does not renew their membership in time," Upadhyay said.

[illegible]

abp न्यूज़

Mann Ki Baat: पीएम मोदी ने RSS की 100 साल की यात्रा को बताया अद्भुत, 'राष्ट्र प्रथम' भावना को भी सराहा

भारत EXPRESS
सत्य • साहस • समर्पण

PM Modi pays tribute to Zubeen Garg: وزیراعظم نریندر مودی نے زوبین گرگ کو پیش کیا خراج عقیدت، کہا- وہ ہمیشہ ہماری یادوں میں رہیں گے

The Pioneer

PM pays tribute to Bhupen Hazarika, Zubeen in Mann ki Baat programme

ETV بھارت

من کی بات میں وزیراعظم مودی نے سودیشی کو فروغ پر دیا زور

Hindustan Times

'Honoured': Indian Navy officers after PM Modi hails Navika Sagar Parikrama in 'Mann Ki Baat'

The Indian EXPRESS

On Mann Ki Baat, PM Modi lauds RSS, announces Unesco push for Chhath Puja, reiterates 'swadeshi' call

livemint

Mann ki Baat: मन की बात में पीएम मोदी ने की खास विषयों पर चर्चा, लोगों से की खादी खरीदने की अपील

NBT
नवभारत टाइम्स

मन की बात में PM मोदी ने परंपरा और इनोवेशन के मेल को सराहा, झारखंड के आशीष और बिहार की स्वीटी के काम की तारीफ

NEWS18 اردو

PM Modi Mann ki Baat: پی ایم مودی نے من کی بات کے 126ویں ایپی سوڈ میں لتا منگیشکر کو ان کی یوم پیدائش پر کیا یاد

THE HINDU

Mann Ki Baat: Modi urges youth to read S.L. Bhyrappa's books

The Statesman

PM Modi pays tribute to Bhagat Singh, Lata Mangeshkar in 'Mann Ki Baat' address

TIMES NOW

PM Narendra Modi Pays Tribute To Zubeen Garg In Mann Ki Baat, Calls Him 'Kohinoor'

THE TIMES OF INDIA

Mann Ki Baat: PM Modi praises RSS; urges Khadi push on Gandhi Jayanti

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

गाँधी जी ने हमेशा स्वदेशी को अपनाने पर बल दिया और इनमें खादी सबसे प्रमुख थी। दुर्भाग्य से आज़ादी के बाद, खादी की रौनक कुछ फीकी पड़ती जा रही थी, लेकिन बीते 11 साल में खादी के प्रति देश के लोगों का आकर्षण बहुत बढ़ गया है।

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार